गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 255
दि. 16.01.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

ममता सरकार को 'सुप्रीम' झटका: सुप्रीम कोर्ट ने ईडी अफसरों पर दर्ज एफआईआर पर लगाई रोक, I-PAC रेड मामले में बंगाल सरकार को नोटिस

(जीएनएस)। नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार को गुरुवार को उस समय बड़ा कानूनी झटका लगा, जब सुप्रीम कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों के खिलाफ दर्ज एफआईआर पर अंतरिम रोक लगा दी। शीर्ष अदालत ने I-PAC रेड मामले में ईडी की याचिका पर सुनवाई करते हुए राज्य सरकार को नोटिस जारी किया और दो सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल करने को कहा। जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा और जस्टिस विपुल पंचोली की पीठ ने कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा कि केंद्रीय एजेंसी के आरोप गंभीर प्रकृति के हैं और राज्य सरकार को किसी भी सूरत में जांच एजेंसी के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। अदालत ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि कानून के अनुसार जांच एजेंसी को अपना काम करने की पूरी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने इस पूरे घटनाक्रम को बेहद संवेदनशील और दूरगामी प्रभाव वाला बताया। पीठ ने कहा कि यदि केंद्रीय एजेंसियां किसी संगठित अपराध, मनी लॉन्ड्रिंग या भ्रष्टाचार के मामलों की जांच कर रही हैं और उन्हें राजनीतिक दबाव या प्रशासनिक हस्तक्षेप के जरिए रोका जाता है, तो यह देश की संघीय व्यवस्था और कानून के शासन के लिए गंभीर चुनौती बन सकता है। अदालत ने यह भी कहा कि ऐसे मामलों में अगर स्पष्ट दिशानिर्देश तय नहीं हुए तो भविष्य में अराजकता जैसी स्थिति पैदा हो सकती है। अदालत ने 3 फरवरी को अगली सुनवाई की तारीख तय करते हुए तब तक ईडी अधिकारियों के खिलाफ दर्ज एफआईआर पर रोक जारी रखने का आदेश दिया।

यह पूरा विवाद उस छापेमारी से जुड़ा है, जो ईडी ने चुनावी रणनीति बनाने वाली कंपनी इंडियन पॉलिटिकल एक्शन कमेटी (I-PAC) के निदेशक प्रतीक जैन के ठिकानों पर की थी। यह कार्रवाई कथित तौर पर 2,742 करोड़ रुपये के कोयला

तस्करी से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले की जांच के सिलसिले में की गई थी। ईडी का आरोप है कि इस घोटाले से जुड़े लगभग 20 करोड़ रुपये हवाला के माध्यम से I-PAC तक पहुंचाए गए। केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI) ने इस प्रकरण में 27 नवंबर 2020 को प्राथमिकी दर्ज की थी, जिसके अगले ही दिन 28 नवंबर 2020 को ईडी ने मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम कानून के तहत प्राथमिकी दर्ज कर ली, जिससे जांच की पूरी प्रक्रिया बाधित हो गई। एजेंसी ने सुप्रीम कोर्ट में दायर अपनी याचिका में आरोप लगाया है कि राज्य सरकार ने न केवल जांच में रुकावट डाली, बल्कि महत्वपूर्ण दस्तावेजों और इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों को नष्ट करने की भी कोशिश की। याचिका में यह भी कहा गया है कि यह कदम सीधे तौर पर न्यायिक प्रक्रिया में हस्तक्षेप और केंद्रीय कानूनों के उल्लंघन के दायरे में आता है।

सुप्रीम कोर्ट ने इन्हीं आरोपों को गंभीर मानते हुए राज्य सरकार से जवाब तलब किया है। पीठ ने मौखिक टिप्पणी में कहा कि लोकतंत्र में किसी भी सरकार को यह अधिकार नहीं है कि वह कानून के तहत काम कर रही एजेंसियों को राजनीतिक कारणों से निशाना बनाए। अदालत ने यह सवाल भी उठाया कि अगर केंद्रीय एजेंसियों के अधिकारियों पर इस तरह से मुकदमे दर्ज किए जाने लगे तो फिर निष्पक्ष जांच कैसे संभव होगी। यह टिप्पणी ममता सरकार के लिए बड़ा संदेश मानी जा रही है, क्योंकि राज्य और केंद्र के बीच पहले से ही टकराव की स्थिति बनी हुई है।

इस फैसले के तुरंत बाद राजनीतिक बयानबाजी भी तेज हो गई। भारतीय जनता पार्टी ने इसे ममता बनर्जी सरकार की नैतिक हार बताते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश से यह साबित हो गया है कि पश्चिम बंगाल में कानून का राज नहीं बल्कि 'जंगल राज' चल रहा है। भाजपा नेताओं का कहना है कि राज्य सरकार को जांच एजेंसियों की मदद करनी चाहिए थी, लेकिन उसने उल्टे फाइलें जब्त कर लीं और अधिकारियों पर ही मुकदमे दर्ज करा दिए। पार्टी के मुताबिक यह रवैया संविधान और संघीय ढांचे के खिलाफ है। भाजपा ने आरोप लगाया कि ममता सरकार खुद को संविधान से ऊपर समझने लगी है, लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कर दिया है कि ऐसा रवैया नहीं चलेगा।

दूसरी ओर तृणमूल कांग्रेस ने भाजपा के आरोपों को राजनीतिक साजिश करार दिया है। पार्टी नेताओं का कहना है कि ईडी और सीबीआई जैसी एजेंसियों का इस्तेमाल चुनाव से ठीक पहले विपक्षी दलों को बदनाम करने के लिए किया जा रहा है। उनका तर्क है कि I-PAC एक पेशेवर संस्था है, जो कई राज्यों में विभिन्न राजनीतिक दलों के लिए काम करती रही है, इसलिए केवल बंगाल में उसके खिलाफ कार्रवाई करना संदेह पैदा करता है। तृणमूल का यह भी कहना है कि राज्य पुलिस ने कानून के अनुसार ही कदम उठाए थे और सुप्रीम कोर्ट में वह मजबूती से अपना पक्ष रखेगी।

यह मामला इसलिए भी राजनीतिक रूप से बेहद अहम हो गया है क्योंकि पश्चिम बंगाल में मार्च-अप्रैल 2026 में विधानसभा चुनाव होने हैं। I-PAC वही संस्था है, जिसने 2021 के चुनाव में तृणमूल कांग्रेस की रणनीति तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। प्रशांत किशोर से जुड़ी इस कंपनी को चुनावी प्रबंधन का बड़ा खिलाड़ी माना जाता है। ऐसे में ईडी की कार्रवाई को विपक्ष राजनीतिक बदले की भावना से जोड़ रहा है, जबकि केंद्र सरकार का कहना है कि जांच पूरी तरह कानूनी तथ्यों पर आधारित है।

कानूनी जानकारों का मानना है कि सुप्रीम कोर्ट का यह आदेश संघीय ढांचे के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण है। अदालत ने जिस तरह से केंद्रीय एजेंसियों के काम में राज्य सरकार के हस्तक्षेप पर सवाल उठाए हैं, उससे भविष्य के कई मामलों की दिशा तय हो सकती है। अगर अदालत यह मान लेती है कि राज्य सरकार ने जानबूझकर जांच में बाधा डाली, तो यह पश्चिम बंगाल प्रशासन के लिए बड़ी संवैधानिक मुश्किल खड़ी कर सकता है। वहीं, यदि राज्य सरकार अपने फैसलों को कानूनी रूप से सही साबित कर देती है, तो केंद्र की एजेंसियों की कार्यप्रणाली पर भी प्रश्नचिह्न लग सकते हैं।

'जन नायकन' के निर्माता की याचिका खारिज, सुप्रीम कोर्ट ने सीबीएफसी को प्रमाणपत्र देने से किया इनकार

(जीएनएस)। नई दिल्ली। तमिल सिनेमा के सुपरस्टार विजय की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'जन नायकन' की रिलीज पर छाया कानूनी संकट और गहरा हो गया है। सुप्रीम कोर्ट ने फिल्म के निर्माता की उस याचिका को खारिज कर दिया है, जिसमें केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (CBFC) को तत्काल प्रमाणपत्र जारी करने का निर्देश देने की मांग की गई थी। शीर्ष अदालत के इस फैसले से निर्माताओं को बड़ा झटका लगा है और फिल्म की रिलीज एक बार फिर अनिश्चितता के भंवर में फंस गई है। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने स्पष्ट किया कि इस स्तर पर अदालत सीधे सीबीएफसी को आदेश नहीं दे सकती और मामला पहले मद्रास हाईकोर्ट में ही तय होना चाहिए। अदालत ने हाईकोर्ट में सुनवाई की धीमी रफ्तार पर नाराजगी जरूर जताई, लेकिन निर्माताओं को वहीं अपना पक्ष मजबूती से रखने का निर्देश दिया।

सुनवाई के दौरान फिल्म निर्माताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी ने जोरदार दलीलें पेश कीं। उन्होंने कहा कि फिल्म की रिलीज में हो रही देरी से केवीएन प्रोडक्शंस एलएलपी को करोड़ों रुपये का आर्थिक नुकसान हो रहा है। पोंगल जैसे बड़े त्योहार के मौके पर फिल्म को रिलीज करने की पूरी योजना बनाई गई थी, प्रचार-प्रसार

पर भारी खर्च हो चुका है और सिनेमाघरों की बुकिंग भी कर ली गई थी। ऐसे में प्रमाणपत्र न मिलने के कारण पूरी निवेश राशि दांव पर लग गई है। रोहतगी ने यह भी तर्क दिया कि एकल न्यायाधीश ने जब प्रमाणपत्र जारी करने का आदेश दिया था, तब उस पर रोक लगाना न्यायसंगत नहीं था। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इन तर्कों के बावजूद हस्तक्षेप से इनकार कर दिया और कहा कि हाईकोर्ट की खंडपीठ को ही पहले इस विवाद का निपटारा करना चाहिए।

यह पूरा मामला तब शुरू हुआ जब सीबीएफसी ने फिल्म के कुछ दृश्यों और संवादों पर आपत्ति जताते हुए प्रमाणपत्र देने से रोक दिया। बताया जा रहा है कि फिल्म की राजनीतिक पृष्ठभूमि और कुछ संवेदनशील विषयों को लेकर बोर्ड के भीतर मतभेद थे। इसके बाद निर्माता मद्रास हाईकोर्ट पहुंचे, जहां एकल न्यायाधीश ने उनके पक्ष में फैसला देते हुए प्रमाणपत्र जारी करने का निर्देश दिया। लेकिन इस आदेश को चुनौती देते हुए मामला खंडपीठ के पास चला गया और वहां से अंतरिम रोक लग गई। इसी रोक के खिलाफ निर्माता सुप्रीम कोर्ट पहुंचे थे, लेकिन उन्हें यहां भी राहत नहीं मिल सकी।

सुप्रीम कोर्ट ने हालांकि हाईकोर्ट को यह जरूर निर्देश दिया कि वह 20 जनवरी तक इस मामले पर अंतिम फैसला सुनाए। पीठ ने टिप्पणी की कि फिल्म उद्योग से जुड़े मामलों में अत्यधिक देरी न्याय के हित में नहीं होती, क्योंकि इससे न केवल निर्माताओं बल्कि सिनेमा से जुड़े हजारों लोगों की रोजी-रोटी प्रभावित होती है। अदालत ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सेंसरशिप के बीच संतुलन बनाना जरूरी है, लेकिन यह काम संबंधित वैधानिक संस्थाओं और उच्च न्यायालय के स्तर पर ही होना चाहिए। 'जन नायकन' केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि मौजूदा तमिल राजनीति के संदर्भ में भी बेहद महत्वपूर्ण मानी जा रही है। अभिनेता विजय ने हाल ही में सक्रिय राजनीति में प्रवेश की घोषणा की है और माना जा रहा है कि यह उनकी पूर्णकालिक राजनीतिक पारी से पहले की आखिरी फिल्म हो सकती है। यही कारण है कि फिल्म को लेकर प्रशंसकों के बीच जबरदस्त उत्साह है। फिल्म के ट्रेलर और गानों को सोशल मीडिया पर अभूतपूर्व प्रतिक्रिया मिली है। वितरकों का कहना है कि यह विजय के करियर की सबसे बड़ी ओपनिंग वाली फिल्म साबित हो सकती थी, लेकिन कानूनी अड़चनों ने पूरा गणित बिगाड़ दिया है। फिल्म उद्योग से जुड़े जानकारों का मानना है कि यह विवाद केवल एक फिल्म तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे सेंसरशिप की पूरी प्रक्रिया पर नए सिरे से बहस छिड़ गई है। कई निर्माता और निर्देशक लंबे समय से यह आरोप लगाते रहे हैं कि सीबीएफसी का रवैया जरूरत से ज्यादा सख्त और कई बार राजनीतिक प्रभाव से प्रेरित नजर आता है। दूसरी ओर बोर्ड का तर्क है कि उसका काम समाज की संवेदनशीलता और कानून व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेना है। 'जन नायकन' के मामले ने इन दोनों पक्षों के बीच टकराव को खुलकर सामने ला दिया है। निर्माताओं का कहना है कि उन्होंने बोर्ड द्वारा सुझाए गए कई बदलाव पहले ही स्वीकार कर लिए थे, फिर भी प्रमाणपत्र रोका गया। उनका तर्क है कि फिल्म में ऐसा कुछ भी नहीं है जो कानून या सार्वजनिक नैतिकता के खिलाफ हो। यह एक काल्पनिक राजनीतिक ड्रामा है, जिसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के तहत देखा जाना चाहिए।

इंफाल घाटी में सुरक्षा बलों की बड़ी कार्रवाई, पांच उग्रवादी गिरफ्तार

(जीएनएस)। इंफाल। मणिपुर की इंफाल घाटी में सुरक्षा बलों ने उग्रवाद के खिलाफ एक और महत्वपूर्ण सफलता हासिल करते हुए प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े पांच उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार यह कार्रवाई अलग-अलग इलाकों में की गई, जिसमें जबरन वसूली, डराने-धमकाने और संगठन के लिए नेटवर्क खड़ा करने जैसी गतिविधियों में शामिल लोगों को पकड़ा गया। इन गिरफ्तारियों को घाटी में शांति व्यवस्था बहाल करने की दिशा में अहम कदम माना जा रहा है, क्योंकि पिछले कुछ महीनों से स्थानीय व्यापारियों और आम नागरिकों से रंगदारी वसूले जाने की शिकायतें लगातार बढ़ रही थीं।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि प्रतिबंधित संगठन कांगलेइपाक कम्युनिस्ट पार्टी (नोयन) के तीन सक्रिय सदस्यों को इंफाल पूर्व जिले के मंत्रीपुखरी लामलोंगेई मानिंग लीकाई क्षेत्र से दबोचा गया। इन तीनों पर आरोप है कि वे स्थानीय दुकानदारों और छोटे कारोबारियों से संगठन के नाम पर जबरन पैसे वसूलते थे और रकम न देने पर गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी देते थे। लंबे समय से इनकी गतिविधियों पर नजर रखी जा रही थी और पुख्ता सूचना मिलने के बाद विशेष टीम ने घेराबंदी कर इन्हें गिरफ्तार किया। पुलिस का कहना है कि इनके पास से कुछ आपत्तिजनक दस्तावेज और मोबाइल फोन बरामद हुए हैं, जिनसे संगठन के नेटवर्क के बारे में अहम सुराग मिलने की उम्मीद है। इसी क्रम में इंफाल पश्चिम जिले के सेकमाई खुनू इलाके से प्रतिबंधित संगठन कांगलेई यावोल कन्ना लुप (केवाईकेएल) के सदस्य 35 वर्षीय शगोलसेम लोकेशोर सिंह को गिरफ्तार किया गया। पुलिस के मुताबिक लोकेशोर लंबे समय से संगठन के लिए चंदा उगाही और युवाओं को गुमराह कर अपने साथ जोड़ने का काम कर रहा था। उस पर यह भी आरोप है कि वह संगठन के लिए सुरक्षित ठिकानों की व्यवस्था करता था और संदेशवाहक की भूमिका निभाता था। पूछताछ के दौरान उसने कई साथियों के नाम बताए हैं, जिनके आधार पर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

पांचवीं गिरफ्तारी के रूप में केवाईकेएल (सोरेपा) गुट के 19 वर्षीय सदस्य शमुलैलातपम अर्बिन शर्मा को पकड़ा गया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि इतनी कम उम्र में उसका उग्रवादी गतिविधियों में शामिल होना चिंताजनक संकेत है। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि वह सोशल मीडिया और स्थानीय संपर्कों के माध्यम से संगठन के लिए प्रचार करता था और युवाओं को भड़काने की कोशिश कर रहा था। सुरक्षा एजेंसियां अब यह पता लगाने में जुटी हैं कि उसे किसने संगठन से जोड़ा और उसके पीछे कौन-कौन से बड़े चेहरे काम कर रहे थे।

ईरान में फंसे भारतीय नागरिकों को निकालेगी सरकार आज से शुरू हो सकता है वतन वापसी का अभियान

(जीएनएस)। नई दिल्ली। ईरान में पिछले लगभग पंद्रह दिनों से जारी हिंसा, राजनीतिक तनाव और विरोध प्रदर्शनों के कारण हालात तेजी से बिगड़ते जा रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में भारत सरकार ने वहां फंसे अपने नागरिकों की सुरक्षित वापसी के लिए विशेष अभियान चलाने की तैयारी शुरू कर दी है। विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार, यह अभियान शुक्रवार से आरंभ हो सकता है, जिसके तहत इच्छुक भारतीयों को चरणबद्ध तरीके से स्वदेश लाया जाएगा।

विदेश मंत्रालय लगातार ईरान की स्थिति पर नजर बनाए हुए है। मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, तेहरान स्थित भारतीय दूतावास और अन्य राजनयिक मिशनों से निरंतर संपर्क किया जा रहा है ताकि वहां रह रहे भारतीयों की सही संख्या, उनकी स्थिति और आवश्यकताओं का आकलन किया जा सके। सरकार का प्राथमिक लक्ष्य महिलाओं, बच्चों, विद्यार्थियों और कामकाजी पेशेवरों को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना है, जो मौजूदा हालात में स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं।

ईरान के कई प्रमुख शहरों में हिंसक झड़पों, कर्फ्यू और संचार सेवाओं पर पाबंदियों की खबरें आ रही हैं। स्थानीय प्रशासन द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण आम जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। ऐसी स्थिति में भारतीय समुदाय के लोगों को दैनिक जरूरतों, आवागमन और सुरक्षा संबंधी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। विशेषकर छोटे व्यवसायियों और छात्रों के लिए हालात अधिक कठिन बताए जा रहे हैं।

सूत्रों के मुताबिक, सरकार वतन वापसी के लिए विशेष उड़ानों की व्यवस्था कर सकती है। एयर इंडिया सहित अन्य भारतीय विमानन कंपनियों से इस संबंध में बातचीत चल रही है। जरूरत पड़ने पर नौसेना या वायुसेना के विमानों के उपयोग की संभावना से भी इनकार नहीं किया गया है। विदेश मंत्रालय ने ईरान में रह रहे भारतीयों से अपील की है कि वे दूतावास में अपना पंजीकरण अवश्य कराएं और अनावश्यक रूप से घरों से बाहर न निकलें।

तेहरान, इस्फहान, शीराज और मशहद जैसे शहरों में बड़ी संख्या में भारतीय कामगार, विद्यार्थी और पेशेवर रहते हैं। कई लोग चिकित्सा, इंजीनियरिंग और व्यापार के क्षेत्र से जुड़े हैं। सरकार इन सभी वर्गों की सुरक्षित निकासी के लिए चरणबद्ध योजना बना रही है ताकि किसी प्रकार की अफरातफरी न फैले और हर व्यक्ति सुरक्षित तरीके से भारत लौट सके। राजनयिक सूत्रों का कहना है कि भारत सरकार इस पूरे अभियान को मानवीय प्राथमिकता के आधार पर संचालित करेगी। आवश्यकता पड़ने पर ईरान सरकार से भी समन्वय स्थापित किया जाएगा ताकि निकासी प्रक्रिया में किसी प्रकार की बाधा न आए। विदेश मंत्रालय ने हेल्पलाइन नंबर और ईमेल जारी करने की भी तैयारी की है, जिनके माध्यम से लोग सीधे सहायता प्राप्त कर सकेंगे।

मौजूदा हालात को देखते हुए माना जा रहा है कि यह अभियान आने वाले कुछ दिनों तक जारी रह सकता है। सरकार का स्पष्ट संदेश है कि ईरान में मौजूद हर भारतीय नागरिक की सुरक्षा उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता है, और उन्हें सकुशल स्वदेश लाने के लिए हर संभव कदम उठाए जाएंगे।

चैतन्य बघेल की जमानत को चुनौती मामले में सुनवाई टली

(जीएनएस)। नई दिल्ली। छत्तीसगढ़ के चर्चित शराब घोटाले से जुड़े मामले में पूर्व मुख्यमंत्री के बेटे चैतन्य बघेल को मिली जमानत को चुनौती देने वाली राज्य सरकार की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट में प्रस्तावित सुनवाई फिलहाल स्थगित कर दी गई है। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विजय बिश्नोई की पीठ ने समयाभाव के कारण मामले को अगली तारीख के लिए सूचीबद्ध कर दिया। अब इस प्रकरण पर विस्तार से सुनवाई बाद की तिथि पर होगी।

सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता महेश जेठमलानी ने दलील दी कि चैतन्य बघेल कथित शराब घोटाले के प्रमुख साजिशकर्ताओं में से एक हैं और उनके खिलाफ पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि हाईकोर्ट द्वारा जमानत दिए जाने से जांच प्रभावित हो सकती है तथा गवाहों पर दबाव पड़ने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। राज्य सरकार का पक्ष है कि यह घोटाला संगठित तरीके से किया गया और इसमें उच्च स्तर पर मिलीभगत रही, इसलिए आरोपियों को राहत देना जांच के हित में नहीं है।

दूसरी ओर चैतन्य बघेल की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी ने हाईकोर्ट के फैसले का बचाव करते हुए कहा कि मामले की जांच पिछले दो वर्षों से चल रही है और इस दौरान आरोपी ने जांच में पूरा सहयोग किया है। उन्होंने तर्क दिया कि हाईकोर्ट ने सभी तथ्यों, दस्तावेजों और कानूनी पहलुओं पर गहन विचार करने के बाद ही जमानत का आदेश पारित किया था। रोहतगी ने यह भी कहा कि किसी व्यक्ति को अनिश्चित काल तक जेल में रखना न्यायसंगत नहीं है, विशेषकर तब जब मुकदमे की सुनवाई अभी प्रारंभिक चरण में हो।

उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने 2 जनवरी को चैतन्य बघेल को दो अलग-अलग मामलों में जमानत प्रदान की थी। इन्हीं आदेशों के खिलाफ राज्य सरकार ने शीर्ष अदालत का दरवाजा खटखटाया है। सरकार का आरोप है कि शराब नीति के क्रियान्वयन में बड़े पैमाने पर अनियमितताएं हुईं, जिससे सरकारी राजस्व को भारी नुकसान पहुंचा। जांच एजेंसियों के अनुसार इस कथित घोटाले में कई प्रभावशाली लोग शामिल रहे हैं।

फिलहाल सुप्रीम कोर्ट द्वारा सुनवाई टल जाने के कारण हाईकोर्ट का जमानत आदेश प्रभावी बना रहेगा। कानूनी जानकारों के मुताबिक अगली सुनवाई में शीर्ष अदालत को यह तय करना होगा कि क्या हाईकोर्ट द्वारा दी गई राहत कानून सम्मत थी या राज्य सरकार के आरोपों को देखते हुए जमानत रद्द की जानी चाहिए। इस मामले पर राजनीतिक और कानूनी हलकों की निगाहें टिकी हुई हैं, क्योंकि यह प्रकरण छत्तीसगढ़ की राजनीति में भी खासा संवेदनशील माना जा रहा है।

संपादकीय

पैक्स सिलिका क्या है? इसमें भारत को शामिल करने से अमेरिका को क्या लाभ मिलेगा?

पैक्स सिलिका (Pax Silica) अमेरिका की अगुवाई वाली एक रणनीतिक तकनीकी पहल है, जो सिलिकॉन-आधारित सप्लाई चेन को मजबूत करने पर केंद्रित है। यह एआई (AI), सेमीकंडक्टर और एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में वैश्विक निर्भरता कम करने का प्रयास करती है। यह नवीनतम अंतर्राष्ट्रीय पहल क्रिटिकल मिनरल्स, ऊर्जा संसाधनों, चिप निर्माण, एआई (AI) इंफ्रास्ट्रक्चर और लॉजिस्टिक्स की सुरक्षित सप्लाई चेन बनाती है। इसलिए अमेरिकी विदेश विभाग इसे "पॉजिटिव-सम" साझेदारी मानता है, जो चीन जैसी निर्भरताओं से बचाव करती है। इससे विश्वसनीय देशों में नवाचार और निवेश बढ़ता है। इस प्रकार पैक्स सिलिका का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र में चीन के प्रभुत्व को कम करना और विश्वसनीय देशों के बीच सुरक्षित तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है।

चूंकि भारत के लिए इसका रणनीतिक महत्व है, इसलिए भारत को हाल ही में इसमें पूर्ण सदस्यता का न्योता मिला है, जो ग्लोबल चिप हब बनने का अवसर देगा। इससे जहां अमेरिका, जापान और दक्षिण कोरिया जैसी कंपनियों से भारी निवेश, तकनीकी हस्तांतरण और रोजगार सृजन होगा। वहीं रक्षा, अंतरिक्ष और सैन्य सुरक्षा में भी मजबूती मिलेगी। इसका प्रमुख उद्देश्य है कि यह वैश्विक पहल महत्वपूर्ण खनिजों, ऊर्जा स्रोतों, सेमीकंडक्टर, उन्नत विनिर्माण, एआई (AI) अवसंरचना और लॉजिस्टिक्स क्षेत्रों में दबावपूर्ण निर्भरताओं को घटाती है। उच्च-तकनीकी संयुक्त उद्यमों और रणनीतिक सह-निवेश को बढ़ावा देकर नवाचार को प्रोत्साहित करती है। संवेदनशील प्रौद्योगिकियों को चिंताजनक देशों से बचाने का लक्ष्य रखती है।

जहां तक इसकी संरचना की बात है तो अमेरिका इसके संस्थापक सदस्य के रूप में नेतृत्व करता है, जिसमें जापान, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, नीदरलैंड्स, यूनाइटेड किंगडम, इज़राइल, यूएई और ऑस्ट्रेलिया जैसे समान विचारधारा वाले देश शामिल हैं। यह गठबंधन-आधारित मॉडल पर काम करती है, जो साझा निवेश और सहयोग पर जोर देती है। भारत को हाल ही में पूर्ण सदस्यता का निमंत्रण मिला है। जनवरी 2026 में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने भारत को इसमें शामिल करने की घोषणा की। जबकि इससे पहले टैरिफ विवाद से भारत बाहर था, लेकिन अब यह साझेदारी भारत-अमेरिका संबंधों को नई ऊंचाई देगी। पैक्स सिलिका में अमेरिका नेतृत्व करता है और इसमें जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान जैसे प्रमुख देश शामिल हैं। यह पहल विश्वसनीय साझेदार देशों को जोड़ती है ताकि सिलिकॉन सप्लाई चेन मजबूत हो। इसके मुख्य सदस्य देश निम्नलिखित हैं:- संस्थापक सदस्यः अमेरिका (नेतृत्वकर्ता), जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान। अन्य प्रमुख सदस्यः नीदरलैंड्स, यूनाइटेड किंगडम, इज़राइल, संयुक्त अरब अमीरात (UAE), सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया। मसलन, ये देश उच्च-तकनीकी विनिर्माण और AI क्षेत्रों में मजबूत क्षमता रखते हैं। इससे भारत को सेमीकंडक्टर और AI सप्लाई चेन में प्रमुख स्थान मिलेगा। भारत के पैक्स सिलिका में शामिल होने से चीन पर मुख्य रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, क्योंकि यह पहल विशेषकर सिलिकॉन, सेमीकंडक्टर और एआई (AI) सप्लाई चेन में उसके एकाधिकार को चुनौती देगी। रूस पर अप्रत्यक्ष प्रभाव हो सकता है, लेकिन सीधा उल्लेख कम है। यह वैश्विक तकनीकी निर्भरता को पुनर्गठित करेगा। इसका चीन पर प्रभाव पड़ेगा क्योंकि चीन वर्तमान में महत्वपूर्ण खनिजों, ऊर्जा स्रोतों, चिप निर्माण और AI इंफ्रास्ट्रक्चर पर हावी है। लिहाजा पैक्स सिलिका के माध्यम से भारत का प्रवेश उसके प्रभुत्व को कम करेगा, दबावयुक्त निर्भरता घटाएगा और वैकल्पिक सप्लाई चेन बनाएगा। इससे चीन के निर्यात बाजार और तकनीकी वर्चस्व पर दबाव बढ़ेगा। जहां तक रूस पर प्रभाव की बात है तो रूस पर इसके प्रत्यक्ष प्रभाव का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिला, लेकिन ट्रंप प्रशासन के रूसी तेल खरीद पर 500% टैरिफ जैसे कदमों से व्यापक आर्थिक दबाव जुड़ सकता है। दरअसल पैक्स सिलिका ऊर्जा स्रोतों की सुरक्षित चेन पर फोकस करता है, जो रूस के पारंपरिक ऊर्जा निर्यात को अप्रत्यक्ष चुनौती दे सकता है। इसका सामरिक निहितार्थ यह होगा कि भारत के बढ़े कदम से अमेरिका-भारत साझेदारी मजबूत होगी।इसको मजबूत कर भू-राजनीतिक संतुलन बदलेगा, जहां चीन-रूस गठजोड़ कमजोर पड़ सकता है। जबकि भारत को निवेश और तकनीक मिलने से उसकी वैश्विक स्थिति मजबूत होगी।

विविधता में भारत की एकता का उत्सव

> "हमारी संस्कृति में संगम का बहुत महत्व है। इस पहलू से भी काशी-तमिल संगमम एक अनूठा प्रयास है। इसमें जहां भारत की विविध परंपराओं के बीच अद्भुत सामंजस्य दिखता है, वहीं पता चलता है कि कैसे हम एक- दूसरे की परंपराओं का सम्मान करते हैं।

कुछ दिन पहले ही मुझे सोमनाथ की पवित्र भूमि पर सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में हिस्सा लेने का सुअवसर मिला। इस पर्व को हम वर्ष 1026 में सोमनाथ पर हुए पहले आक्रमण के एक हजार साल पूरे होने पर मना रहे हैं। इस क्षण का साक्षी बनने को देश के कोने-कोने से लोग सोमनाथ पहुंचे। यह इस बात का प्रमाण है कि भारतवर्ष के लोग जहां अपने इतिहास और संस्कृति से गहराई से जुड़े हैं, वहीं कभी हार न मानने वाला साहस भी उनके जीवन की बड़ी विशेषता है। यही भावना उन्हें एक साथ जोड़ती भी है। इस कार्यक्रम के दौरान मेरी मुलाकात कुछ ऐसे लोगों से भी हुई, जो इससे पहले सौराष्ट्र-तमिल संगमम के दौरान सोमनाथ आए थे और इससे पहले काशी-तमिल संगमम के समय काशी भी गए थे। ऐसे मंचों को लेकर उनकी सकारात्मक सोच ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैंने तय किया कि क्यों ना इस विषय पर अपने कुछ विचार साझा करूं।

'मन की बात' के एक एपिसोड में मैंने कहा था कि अपने जीवन में तमिल भाषा न सीख पाने का मुझे बहुत दुख है। हमारा सौभाग्य है कि बीते कुछ वर्षों से हमारी सरकार तमिल संस्कृति को देश में और लोकप्रिय बनाने में निरंतर जुटी है। यह 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को और सशक्त बनाने वाला है। हमारी संस्कृति में संगम का बहुत महत्व है। इस पहलू से भी काशी-तमिल संगमम एक अनूठा प्रयास है। इसमें जहां भारत की विविध परंपराओं के बीच अद्भुत सामंजस्य दिखता है, वहीं पता चलता है कि कैसे हम एक- दूसरे की परंपराओं का सम्मान करते हैं।

काशी तमिल संगमम के आयोजन के लिए काशी सबसे उपयुक्त स्थान कहा जा सकता है। यह वही काशी है, जो अनादि काल से हमारी सभ्यता की धुरी बनी है। यहां हजारों वर्षों से लोग ज्ञान, जीवन के अर्थ और मोक्ष की खोज में आते रहे हैं।काशी का तमिल समाज

और संस्कृति से गहरा नाता रहा है। काशी बाबा विश्वनाथ की नगरी है, तो तमिलनाडु में रामेश्वरम तीर्थ है। तमिलनाडु की तेनकासी को दक्षिण की काशी या दक्षिण काशी कहा जाता है। पूज्य कुमारगुरुपरर् स्वामिजि ने अपनी विद्वता और आध्यात्म परंपरा के माध्यम से काशी और तमिलनाडु के बीच सशक्त और स्थायी संबंध स्थापित किया था।

तमिलनाडु के महान सपूत महाकवि सुब्रमण्यम भारती जी को भी काशी में बौद्धिक विकास और आध्यात्मिक जागरण का अद्भुत अवसर दिखा। यहीं उनका राष्ट्रवाद और प्रबल हुआ, साथ ही उनकी कविताओं को एक नई धार मिली। यहीं पर स्वतंत्र और अखंड भारत की उनकी संकल्पना को स्पष्ट दिशा मिली। कई उदाहरण हैं, जो काशी व तमिलनाडु के बीच गहरे आत्मीय संबंध दर्शाते हैं।

वर्ष 2022 में वाराणसी की धरती पर काशी-तमिल संगमम की शुरुआत हुई थी। मुझे इसके उद्घाटन समारोह में शामिल होने का सौभाग्य मिला था। तब तमिलनाडु से आए लेखकों, विद्यार्थियों, कलाकारों, विद्वानों, किसानों और अतिथियों ने काशी के साथ-साथ प्रयागराज और अयोध्या के दर्शन भी किए। इसके बाद के आयोजनों में इस पहल को और विस्तार दिया गया।

इसका उद्देश्य था कि संगमम में समय-समय पर नए विषय जोड़े जाएं, नए और रचनात्मक तरीके अपनाए जाएं व इसमें लोगों की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो। प्रयास था कि ये आयोजन अपनी मूल भावना से जुड़े रहकर भी निरंतर आगे बढ़ता रहे। वर्ष 2023 के दूसरे आयोजन में टेक्नोलॉजी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया, ताकि सुनिश्चित हो कि भाषा इसमें बाधा न बने। इसके तीसरे संस्करण में इंडियन नॉलेज सिस्टम पर विशेष फोकस रखा गया। साथ ही शैक्षिक संवादों, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, प्रदर्शनियों और संवाद सत्रों में लोगों की बड़ी भागीदारी नजर आयी। हजारों लोग इनका हिस्सा बने।

काशी-तमिल संगमम का चौथा संस्करण 2 दिसंबर, 2025 को आरंभ हुआ। इस बार की थीम बहुत रोचक थी- तमिल करकलम् यानि तमिल सीखें...। इससे काशी और दूसरी जगहों के लोगों को खूबसूरत तमिल भाषा सीखने का अनूठा अवसर मिला। तमिलनाडु से आए शिक्षकों ने काशी के विद्यार्थियों के लिए इसे अविस्मरणीय बना दिया! इस बार कई और विशेष कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। प्राचीन तमिल साहित्य ग्रंथ तोलकाप्पियम का चार भारतीय और छह विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया।

तेनकासी से काशी तक पहुंची विशेष व्हीकल एक्सपेडिशन भी देखने को मिली। इसके अलावा काशी में स्वास्थ्य शिविरों और डिजिटल लिट्रेसी कैंप आयोजन के साथ ही कई और सराहनीय प्रयास किए गए। इस अभियान में सांस्कृतिक एकता के संदेश का प्रसार करने वाले पांड्य वंश के महान राजा आदि वीर पराक्रम पांडियन जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूरे आयोजन के दौरान नमो घाट पर प्रदर्शनियां लगाई गईं, बीएचयू में शैक्षणिक सत्र का आयोजन हुआ, साथ ही विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए।

काशी-तमिल संगमम में इस बार जिस चीज ने मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता दी, वो हमारे युवा साथियों का उत्साह है। इससे अपनी जड़ों से और अधिक जुड़े रहने के उनके पैशन का पता चलता है। उनके लिए ये ऐसा अद्भुत मंच है, जहां वे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिए अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं।

संगमम के अलावा काशी की यात्रा भी यादगार बने, इसके लिए विशेष प्रयास किए गए। भारतीय रेल ने लोगों को तमिलनाडु से उत्तर प्रदेश ले जाने के लिए विशेष ट्रेनें चलाईं। इस दौरान कई रेलवे स्टेशनों पर, विशेषकर तमिलनाडु में उनका उत्साह बढ़ाया गया। सुंदर गीतों और आपसी चर्चाओं से ये सफर और आनंददायक बना। यहां मैं काशी और उत्तर प्रदेश के अपने भाइयों और बहनों की सराहना करना चाहूंगा, जिन्होंने काशी-तमिल संगमम को विशेष बनाने में अद्भुत योगदान दिया है। उन्होंने अपने अतिथियों के स्वागत -सत्कार में कोई कसर नहीं छोड़ी। कई लोगों ने तमिलनाडु से आए अतिथियों के लिए अपने घरों के दरवाजे तक खोल दिए। स्थानीय प्रशासन भी चौबीसों घंटे जुटा रहा, ताकि मेहमानों को कोई दिक्कत ना हो। वाराणसी का सांसद होने के नाते मेरे लिए ये गर्व और संतोष का विषय है।

इस बार काशी-तमिल संगमम का समापन समारोह रामेश्वरम में आयोजित किया गया, जिसमें तमिलनाडु के सपूत उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन जी भी मौजूद रहे। उन्होंने इस कार्यक्रम को अपने विचारों से समृद्ध बनाया। भारत की आध्यात्मिक समृद्धि पर बल देते हुए उन्होंने बताया कि कैसे इस तरह के मंच राष्ट्रीय एकता को और सुदृढ़ करते हैं।

काशी-तमिल संगमम का बहुत गहरा प्रभाव देखने को मिला है। इसके जरिए जहां सांस्कृतिक चेतना को मजबूती मिली, वहीं शैक्षिक विमर्श और जनसंवाद को काफी बढ़ावा मिला। इससे हमारी संस्कृतियों के बीच संबंध और प्रगाढ़ हुए। इस मंच ने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को आगे बढ़ाया है, इसलिए आने वाले समय में हम इस आयोजन को और वाइब्रेंट बनाने वाले हैं। ये वो भावना है, जो शताब्दियों से हमारे पर्व-त्योहार, साहित्य, संगीत, कला, खानपान, वास्तुकला और ज्ञान-पद्धतियों का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है।

वर्ष का यह समय हर देशवासी के लिए बहुत पावन माना जाता है। लोग बड़े उत्साह से संक्रांति, उत्तरायण, पोंगल, माघ बिहू जैसे अनेक त्योहार मना रहे हैं। ये सभी उत्सव मुख्य रूप से सूर्यदेव, प्रकृति और कृषि को समर्पित हैं। ये त्योहार लोगों को आपस में जोड़ते हैं, जिससे समाज में सद्भाव और एकजुटता की भावना प्रगाढ़ होती है। इस अवसर पर मैं आप सभी को शुभकामनाएं देता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि इन उत्सवों के साथ हमारी साझी विरासत और सामूहिक भागीदारी की भावना देशवासियों की एकता को और मजबूत करेगी।

प्रेरणा

मिठास से जुड़ता जीवन, रिश्तों से बनती शक्ति

मकर संक्रांति का पर्व भारतीय जीवन-दर्शन में केवल एक तिथि या त्योहार नहीं है, बल्कि यह मनुष्य को स्वयं से और समाज से जोड़ने वाला एक गहन संदेश भी देता है। यह पर्व हमें बताता है कि प्रकृति का नियम केवल परिवर्तन नहीं, बल्कि संतुलन और सहयोग भी है। जब सूर्य उत्तरायण होता है, तो अंधकार से प्रकाश की ओर यात्रा का संकेत मिलता है। ठीक उसी तरह यह पर्व मनुष्य को अकेलेपन, कटुता और अलगाव से बाहर निकलकर प्रेम, मिठास और आपसी जुड़ाव की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

मकर संक्रांति पर तिल और गुड़ का विशेष महत्व है। देखने में ये दोनों साधारण पदार्थ लगते हैं, परंतु इनके भीतर जीवन का गहरा प्रतीक छुपा है। सत्संग के दौरान गुरु द्वारा शिष्यों को तिल-गुड़ के लड्डू देना केवल परंपरा का निर्वाह नहीं था, बल्कि एक मौन शिक्षा थी। जब गुरुजी ने तिल को अलग-अलग दानों का प्रतीक बताया, तो यह बात सीधे मनुष्य के स्वभाव से जुड़ जाती है। हर व्यक्ति अपनी पहचान, सोच और अहं के साथ इस संसार में रहता है। वह स्वयं को स्वतंत्र मानता है और कई बार इसी स्वतंत्रता के अहं में दूसरों से दूरी बना लेता है। ऐसे में जीवन में ज़रा सी ठोकर लगते ही वह भीतर से बिखरने लगता है।

तिल का स्वभाव यही है। वे छोटे-छोटे, अलग-अलग और असंगठित होते हैं। उनकी अपनी कोई सामूहिक शक्ति नहीं होती। लेकिन जैसे ही वही तिल गुड़ की चाशनी में मिलते हैं, उनका स्वरूप बदल जाता है। वे बिखरते नहीं, टूटते नहीं, बल्कि एक मजबूत लड्डू का रूप ले लेते हैं। यह गुड़ केवल मिठास नहीं, बल्कि वह भाव है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है—प्रेम, अपनत्व, सहानुभूति और विश्वास। यही तत्व समाज को संगठन में बदलता है और व्यक्तियों को परिवार का रूप देता है।

आज का मनुष्य तेज़ी से आगे बढ़ रहा है, परंतु इस दौड़ में वह रिश्तों से पीछे छूटता जा रहा है। आत्मनिर्भर बनने की चाह में हम कई बार आत्मकेंद्रित हो जाते हैं। हमें लगता है कि हमें किसी की आवश्यकता नहीं, हम स्वयं पर्याप्त हैं। परंतु यह सोच तिल की तरह हमें अकेला और कमजोर बना देती है। जीवन की वास्तविक मजबूती केवल व्यक्तिगत क्षमता से नहीं, बल्कि आपसी सहयोग से आती है। जब मनुष्य दूसरों से भावनात्मक रूप से जुड़ा होता है, तब वह कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना कर पाता है।

गुड़ की मिठास हमें यह भी सिखाती है कि रिश्तों में गर्माहट आवश्यक है। गुड़ ठंड के मौसम में शरीर को ऊष्मा देता है, ठीक उसी तरह रिश्तों की मिठास जीवन की ठंडक और कठोरता को सहनीय बनाती है। यदि संबंधों में केवल औपचारिकता हो, तो वे जल्दी टूट जाते हैं। परंतु यदि उनमें सच्चाई, त्याग और स्नेह हो, तो वे समय की हर परीक्षा में खरे उतरते हैं। मकर संक्रांति पर मीठा खाने की परंपरा हमें यह याद दिलाती है कि जीवन में कड़वाहट को जितना कम रखा जाए, उतना ही बेहतर है।

"तिल-गुड़ घ्या आणि गोड गोड बोला" जैसी कहावत केवल वाणी की मिठास की बात नहीं करती, बल्कि मन की कटुता को छोड़ने का संदेश देती है। जीवन में मतभेद होना स्वाभाविक है, परंतु उन्हें पकड़े रहना आत्मिक दुर्बलता का संकेत है। गुड़ की तरह मीठा बनना कमजोरी नहीं, बल्कि आंतरिक शक्ति का प्रतीक है। जो व्यक्ति झुककर रिश्तों को बचा लेता है, वही वास्तव में मजबूत होता है।

गुरुजी द्वारा दिया गया यह उदाहरण संगठन और समाज के लिए भी उतना ही प्रासंगिक है। कोई भी संगठन केवल नियमों, अनुशासन या पदों से मजबूत नहीं बनता। उसकी वास्तविक ताकत उसके सदस्यों के बीच के विश्वास और आत्मीयता में होती है। जब लोग केवल स्वार्थ या भय से जुड़े होते हैं, तो संगठन भीतर से खोखला हो जाता है। परंतु जब वे एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी बनते हैं, तब वही संगठन अडिग बन जाता है।

मकर संक्रांति का पर्व हमें यह भी सिखाता है कि जीवन की सार्थकता बिखरने में नहीं, जुड़ने में है। अकेला तिल चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो, वह लड्डू नहीं बन सकता। उसी तरह अकेला मनुष्य चाहे कितना ही प्रतिभाशाली क्यों न हो, वह समाज के बिना अधूरा है। जब हम अपनी भिन्नताओं को स्वीकार कर, प्रेम की मिठास में एक-दूसरे से जुड़ते हैं, तभी जीवन पूर्णता की ओर बढ़ता है।

अंततः मकर संक्रांति हमें यह स्मरण कराती है कि हम सब अलग-अलग तिल हैं, अपनी-अपनी पहचान और स्वभाव के साथ। परंतु यदि हम आत्मीयता, प्रेम और विश्वास के गुड़ में खुद को ढाल लें, तो न केवल हम मजबूत बनते हैं, बल्कि जीवन भी मधुर हो जाता है। यही इस पर्व का वास्तविक संदेश है और यही मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि भी।

सृष्टि में ऊर्जा का नवसंचार करने वाला पर्व है मकर संक्रांति

शीत ऋतु के मध्य जब सूर्यदेव धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करते हैं और उनकी उत्तरायण गति प्रारम्भ होती है, तब मकर संक्रांति होती है। यह पर्व सृष्टि में उर्जा का नवसंचार करने वाला पर्व है। मकर संक्रांति के दिन जप, तप, दान, स्नान, श्रद्धा, तर्पण आदि धार्मिक विधि विधान व कर्मों का विशेष महत्व है। मान्यता है कि इस दिन दिया गया दान सौ गुना बढ़कर प्राप्त होता है। इस दिन उड़द, चावल, तिल, गौ, स्वर्ण, ऊनी, वस्त्र, कम्बल आदि दान करने का विशेष महत्व है। । इस दिन गंगा स्नान एवं गंगातट पर दान का विशेष महत्व है। इस पर्व पर तीर्थराज प्रयाग एवं गंगा सागर में स्नान को महास्नान की संज्ञा दी गयी है। इस संक्रांति से सूर्य सभी राशियों को प्रभावित करते हैं।इस पर्व का का सम्बन्ध हमारे पौराणिक इतिहास से भी है। इस दिन भगवान भास्कर अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उसके घर जाते हैं। महाभारत काल में इसी दिन भीष्म पितामह ने अपनी देह का त्याग किया था। आज ही के दिन गंगाजी भगीरथ के पीछे- पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होती हुई सागर में जाकर मिली थीं। इसी दिन भगवान विष्णु ने असुरों का अंत कर युद्ध समाप्ति की घोषणा की थी और यही कारण है कि इस पर्व को बुराइयों और नकारात्मकता समाप्त करने का पर्व कहा जाता है। वैज्ञानिक मान्यता है कि इस दिन से रातें छोटी एवं दिन बड़े होने लगते हैं तथा सूर्य का ताप बढ़ने लगता है। दिन बड़ा होने से प्रकाश का वातावरण अधिक होता है अतः सूर्य की राशि में हुए परिवर्तन को अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होना माना गया है। प्रकाश अधिक होने से प्राणियों की चैतन्यता एवं कार्यशक्ति में वृद्धि होती हैं।

इस अवसर पर सम्पूर्ण भारत में सूर्य देव की उपासना, आराधना एवं पूजन करने का विधि-विधान है। हरियाणा और पंजाब में यह पर्व लोहड़ी के रूप में मनाया जाता है। इस दिन अंधेरा होते ही आग जलाकर अग्निदेव की पूजा करते हुए तिल गुड़ चावल और भुने हुए मुक्के की आहुति दी जाती है। इस सामग्री को तिल चौली कहा जाता है। इस दिन पारम्परिक मक्के की रोटी व सरसों के साग का आनंद भी उठाया जाता है। उत्तर प्रदेश में यह पर्व दान का पर्व है। तीर्थराज प्रयाग में गंगा, यमुना व सरस्वती के संगम पर विशाल मेला लगता है, जिसे माघ मेले के नाम से जाना जाता है। इसी दिन से मांगलिक कार्यों भी आरम्भ हो जाते है। माघ मेला स्नान पौष पूर्णिमा से शिवरात्रि तक चलता है। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में गोरखनाथ मंदिर में विशाल मेला लगता है जो खिचड़ी मेले के नाम से प्रसिद्ध है। इस अवसर पर नेपाल के राज परिवार की ओर से गोरक्षनाथ को प्रथम खिचड़ी अर्पित होती है। राज्य की सभी नदियों के तट पर स्नान तथा व दान पर्व होता है। इस दिन दान के उपरांत खिचड़ी खाने एवं खिलाने का बड़ा महत्व है। तमिलनाडु में इस पर्व को पोंगल के रूप में चार दिन तक मनाया जाता है। पोंगल मनाने के लिये स्नान करके खुले आंगन में मिट्टी के बर्तन में खीर बनायी जाती है। जिसे पोंगल कहते हैं। इसके बाद सूर्यदेव को भोग लगाया जाता है। कर्नाटक, केरल व आंध्रप्रदेश में इसे संक्रांति ही कहते हैं। बिहार में भी इस पर्व को खिचड़ी नाम से ही जाना जाता हैं। महाराष्ट्र में भी यह पर्व बड़े धूमधाम व उमंग के साथ मनाया जाता है यहाँ इस दिन महिलाएं आपस में तिल, गुड़ एवं रोली और हल्दी बांटती है। वहीं बगाल में इस पर्व पर तिल दान करने की प्रथा है। यहां गंगासागर में प्रतिवर्ष विशाल मेला लगता है। असोम में मकर संक्रांति को माघ बिहु अथवा भोगाली बिहू के नाम से मनाया जाता हैं । गुजरात में मकरसंक्रांति पर दान स्नान के साथ साथ पतंग उड़ाने का भी प्रचलन है जिसमें भारी संख्या में देशी और विदेशी पर्यटक तथा बड़ी- बड़ी हस्तियां हिस्सा लेती हैं।

मकर सक्रांति का पर्व पूरे भारत को एक सूत्र में जोड़ने वाला उत्साह, उमंग और उल्लास का पर्व है। यह समाज को सकारात्मक विचार प्रदान करने वाला पर्व है। सामाजिक एकीकरण का पर्व है। हिन्दुओं की साझी परंपरा का पर्व है। हमें इस आध्यात्मिक उर्जा से भरे पर्व की राष्ट्रीय सार्थकता को समझते हुए इसके मूल स्वरूप को बचाए रखने का प्रण लेकर इसे उपभोक्तावाद से संरक्षित करना होगा।

अभियान

ठाकुर जी के दर्शन की मर्यादा: दिव्य ऊर्जा, विनम्रता और विज्ञान का अद्भुत संतुलन

हिंदू धर्म और भारतीय परंपरा में भगवान के दर्शन केवल आंखों से देखने की साधारण क्रिया नहीं हैं, बल्कि यह आत्मा और परमात्मा के बीच घटित होने वाला एक गहन, सूक्ष्म और संवेदनशील संवाद है। मंदिर की सीढ़ियां चढ़ते ही वातावरण में एक अदृश्य परिवर्तन महसूस होने लगता है। घंटियों की ध्वनि, अगरबत्ती की सुगंध, शंखनाद और मंत्रोच्चार मिलकर मन को बाहरी संसार से धीरे-धीरे भीतर की ओर ले जाने लगते हैं। ऐसे क्षण में हमारे बुजुर्गों और पुजारियों द्वारा बताई गई छोटी-छोटी मर्यादाएं, जैसे ठाकुर जी के ठीक सामने खड़े होकर एकटक दर्शन न करना, केवल रूढ़ि नहीं बल्कि गहरी अनुभूतियों से उपजी हुई जीवन-दृष्टि हैं। पहली नजर में यह बात किसी को परंपरावाद या अंधविश्वास लग सकती है, परंतु जब इस नियम के पीछे छिपे आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक पक्षों को समझा जाए, तो इसका अर्थ अत्यंत व्यापक और तर्कसंगत दिखाई देता है। भारतीय भक्ति परंपरा में भगवान को मात्र पत्थर या धातु की मूर्ति नहीं माना गया है। प्राण-प्रतिष्ठा के बाद वही प्रतिमा एक जीवंत केंद्र बन जाती है, जहां भक्त ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करता है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि मूर्ति एक माध्यम है, जिसके द्वारा अनंत सत्ता सीमित रूप में हमारे सामने प्रकट होती है। जब भक्त मंदिर में प्रवेश करता है, तो वह एक सामान्य भौतिक वातावरण से निकलकर उच्च आध्यात्मिक ऊर्जा क्षेत्र में प्रवेश करता है। यह ऊर्जा इतनी सूक्ष्म और तीव्र मानी गई है कि उसे सीधे और अचानक ग्रहण करना हर व्यक्ति के लिए सहज नहीं होता। जैसे तेज सूर्य को सीधे देखने से आंखें चौंधिया जाती हैं, वैसे ही ठाकुर जी की प्रतिमा से प्रवाहित होने वाली दिव्य चेतना को भी धीरे-धीरे, विनम्र भाव से ग्रहण करना आवश्यक माना गया है। इसलिए परंपरा कहती है कि भगवान के ठीक सामने खड़े होकर लंबे समय तक एकटक देखना उचित नहीं, बल्कि थोड़ा हटकर, तिरछे या झुके हुए भाव से दर्शन करना अधिक हितकारी है।

आध्यात्मिक दृष्टि से यह मर्यादा मनुष्य के अहंकार से भी जुड़ी हुई है। ठीक सामने खड़ा होना अनजाने में बराबरी का भाव पैदा कर सकता है, जबकि भक्ति का मूल तत्व समर्पण है। जब व्यक्ति भगवान के सम्मुख सीधे तनकर खड़ा होता है, तो भीतर कहीं यह भाव जन्म ले सकता है कि मैं देखने वाला हूं और ईश्वर देखे जाने वाले। इसके विपरीत, जब हम किनारे खड़े होकर, सिर झुकाकर या तिरछी दृष्टि से दर्शन करते हैं, तो दास्य और विनम्रता का भाव स्वतः जागृत हो जाता है। यही भाव भक्त को भीतर से कोमल बनाता है और उसके मन के द्वार खोलता है। भक्ति का उद्देश्य केवल ईश्वर को देख लेना नहीं, बल्कि स्वयं को बदल लेना है। इसलिए दर्शन की यह मर्यादा मनुष्य के भीतर सही मानसिक भूमि तैयार करती है। हमारी वैष्णव परंपरा में दर्शन की एक विशेष विधि बताई गई है, जिसके अनुसार भक्त को पहले भगवान के चरणों के दर्शन करने चाहिए और फिर धीरे-धीरे दृष्टि को ऊपर की ओर ले जाना चाहिए। यह क्रम मन को एकाग्र करने की अद्भुत प्रक्रिया है। जब हम सीधे सामने खड़े होकर एक साथ पूरे स्वरूप को देखने का प्रयास करते हैं, तो मन बिखर जाता है, लेकिन चरणों से आरंभ करके मुखारविंद तक पहुंचने में मन स्वतः स्थिर होता चला जाता है। इस यात्रा में केवल आंखें ही नहीं चलतीं, बल्कि भावनाएं भी शुद्ध होती जाती हैं। यह पद्धति बताती है कि दर्शन एक साधना है, क्षणिक दृश्य नहीं।

ब्रजभूमि की परंपराएं इस विषय को और गहराई से समझाती हैं। वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में ठाकुर जी के दर्शन झांकी के रूप में होते हैं, जो कुछ क्षण खुलती और फिर बंद हो जाती है। इसके पीछे मान्यता है कि निरंतर और सीधे सामने से देखने पर भक्त के भीतर अत्यधिक भावावेश उत्पन्न हो सकता है, जिसे संभालना कठिन हो जाता है। साथ ही लोकमान्यता के अनुसार भगवान की मनोहर छवि को लगातार निहारने से 'नजर' लगने का भाव भी जुड़ा है। यह नजर कोई बाहरी अंधविश्वास नहीं, बल्कि मनुष्य की वासनाओं और मानसिक तरंगों से उत्पन्न सूक्ष्म प्रभाव का प्रतीक है। इसलिए दर्शन में संयम, दूरी और मर्यादा का महत्व रखा गया।

यदि इस परंपरा को आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो कई रोचक संकेत मिलते हैं। प्राचीन मंदिर यूं ही कहीं नहीं बनाए गए। वास्तु और ऊर्जा विज्ञान के आधार पर ऐसे स्थान चुने गए, जहां पृथ्वी की चुंबकीय रेखाएं सशक्त होती हैं। गर्भगृह को ऊर्जा के केंद्र के रूप में निर्मित किया जाता था। धातुओं, रत्नों और विशेष निर्माण शैली से वहां एक शक्तिशाली ऊर्जा क्षेत्र बनता है। मूर्ति के ठीक सामने यह ऊर्जा सर्वाधिक सघन होती है। आधुनिक बायो-एनर्जी और न्यूरो-साइंस भी मानते हैं कि तीव्र ऊर्जा के सीधे संपर्क में आने से मस्तिष्क और हृदय की तरंगें प्रभावित होती हैं। इसलिए थोड़ा हटकर खड़े होने से शरीर उस ऊर्जा को क्रमिक रूप से ग्रहण करता है और संतुलन बना रहता है।

मनोविज्ञान भी इस मर्यादा का समर्थन करता है। किसी के ठीक सामने आंखों में आंखें डालकर देखने से संवाद का भाव बनता है, जबकि तिरछे या झुके हुए भाव से देखने पर स्वीकार और समर्पण की मनोदशा पैदा होती है। मंदिर में भक्त संवाद करने नहीं, समर्पित होने आता है। वहां तर्क नहीं, अनुभूति की आवश्यकता होती है। किनारे खड़े होकर दर्शन करने से मन की आक्रामकता घटती है और ग्रहणशीलता बढ़ती है। यही अवस्था प्रार्थना को गहराई देती है।

इस नियम का एक सामाजिक पक्ष भी है। मंदिर सामूहिक उपासना का स्थान है। यदि हर व्यक्ति ठीक सामने खड़ा हो जाए तो अन्य भक्तों के दर्शन में बाधा आएगी। इसलिए किनारे से दर्शन करने की परंपरा परस्पर सम्मान और सह-अस्तित्व का भी संदेश देती है। भारतीय संस्कृति में धर्म केवल व्यक्तिगत मुक्ति का मार्ग नहीं, बल्कि सामूहिक सौहार्द का माध्यम भी रहा है।

दरअसल ठाकुर जी के दर्शन की मर्यादा हमें यह सिखाती है कि ईश्वर के निकट जाना अधिकार नहीं, अनुग्रह है। वहां पहुंचकर मनुष्य को छोटा होना पड़ता है, तभी वह बड़ा अनुभव कर पाता है। यह परंपरा हमें याद दिलाती है कि देखने से अधिक महत्वपूर्ण है देखे जाने योग्य बनना। जब भक्त इस भाव से दर्शन करता है, तब प्रतिमा केवल रूप नहीं रहती, वह चेतना का दर्पण बन जाती है, जिसमें व्यक्ति अपना वास्तविक स्वरूप देखने लगता है।

आज के भागदौड़ भरे युग में मनुष्य हर चीज को अधिकार और उपभोग की दृष्टि से देखने लगा है। ऐसे समय में यह मर्यादा हमें ठहरना, झुकना और स्वीकार करना सिखाती है। मंदिर से लौटते समय यदि मन थोड़ा और शांत हो, अहं थोड़ा और हल्का हो, तो समझना चाहिए कि दर्शन सफल हुए। तब हम केवल प्रसाद नहीं, बल्कि भीतर उतरती हुई दिव्य ऊर्जा, संतुलन और करुणा साथ लेकर लौटते हैं। यही इस परंपरा का सच्चा उद्देश्य है—मनुष्य को भीतर से रूपांतरित करना, ताकि उसका जीवन भी मंदिर जैसा पवित्र और प्रकाशमान बन सके।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

अहमदाबाद में उत्तरायण 2026: पतंगों, आतिशबाजी और उत्साह से सजी रंगीन शाम

(जीएनएस)। अहमदाबाद। उत्तरायण का त्योहार 2026 में इस बार अहमदाबादवासियों के लिए बेहद यादगार साबित हुआ। सुबह से ही शहर की छतें और खुले मैदान उत्साह से भर गए, जहां पतंग उड़ाने के शौकीनों ने अपने पतंग-तोपों और रंग-बिरंगे काइट्स के साथ तैयारी की। हालांकि मौसम ने इस बार थोड़ा खेल दिखाया। सुबह के समय हवा की अनुपस्थिति के कारण पतंग उड़ाने में कुछ कठिनाई आई, लेकिन इसके बावजूद लोग उत्साह में कोई कमी नहीं आने दी।

दिन की शुरुआत थोड़ी धीमी रही। लोग अपने परिवार और दोस्तों के साथ छतों पर पहुंचे, स्वादिष्ट पकवानों का आनंद लिया और उत्तरायण की परंपरागत खुशियों में खुद को डुबो दिया। मसालेदार उंधियू, गरमागर्म जलेबी, ताजगी भरी फ्रूट सलाद और अन्य व्यंजन इस पर्व की मिठास को और बढ़ा रहे थे। लोग एक-दूसरे के घरों में जाकर भी इस उत्सव में शामिल हुए और अपने अनुभव साझा किए।

दोपहर होते-होते हवा की गति थोड़ी बढ़ी और इससे उत्तरायण का माहौल सामान्य हो गया। पतंगबाज़ी का उत्साह बढ़ा और आकाश में रंग-बिरंगे पतंगों ने अपने शौकीनों के चेहरे पर मुस्कान ला दी। शाम के समय तो यह दृश्य और भी मनमोहक

हो गया, जब शहर के विभिन्न इलाकों में आतिशबाजी शुरू हुई। छतों पर और खुले मैदानों में फोड़े गए पटाखों ने दिवाली जैसा वातावरण तैयार कर दिया। रंग-बिरंगी आतिशबाजी ने पूरे शहर का आसमान जगमगा दिया और इसे देखने के लिए कई लोग छतों और बालकनियों में खड़े होकर इसका आनंद ले रहे थे।

शहरवासियों ने केवल पतंग उड़ाने और आतिशबाजी तक ही सीमित नहीं रखा। उन्होंने गरबा और नृत्य के कार्यक्रम आयोजित किए, जिसमें बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों ने भाग लिया। कुछ लोग अपने घरों को रंग-बिरंगी रोशनी और सजावट से सजा रहे थे, जिससे उत्तरायण का माहौल और भी जीवंत हो गया। इस दौरान कई लोगों ने सोशल मीडिया पर अपनी तस्वीरें और वीडियो साझा किए, जिससे यह पर्व शहर के बाहर भी देखने वालों तक पहुंचा।

हालांकि हवा की कमी ने सुबह के समय पतंग उड़ाने वालों की मस्ती को थोड़ी चुनौती दी। एकता गजेरा ने बताया कि सुबह हवा न चलने के कारण उन्हें थोड़ी निराशा हुई, लेकिन दोस्तों और परिवार के साथ स्वादिष्ट पकवानों और हंसी-खुशी के कारण दिन आनंदमय बन गया। अंकुर कुंडलिया ने कहा कि भले ही हवा धीमी थी और आकाश में पतंगों की संख्या कम थी, लेकिन शहर में उत्तरायण का उत्साह देखने योग्य था। वहीं अलका कुंडलिया ने कहा कि उम्मीद है कि आने वाले दिनों में हवा और अनुकूल होगी, जिससे पतंगबाज़ी का असली मजा लिया जा सके।

उत्तरायण के इस पर्व ने यह संदेश दिया कि चाहे मौसम का साथ हो या न हो, उत्साह और परंपरा हमेशा लोगों के दिलों में जीवित रहती है। यह त्योहार न केवल पतंग उड़ाने का है, बल्कि परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने और शहर के रंगीन वातावरण का आनंद लेने का अवसर भी प्रदान करता है। अहमदाबादवासियों ने इस साल के उत्तरायण को यादगार बना दिया और इसे मनाने की अपनी पारंपरिक शैली और उत्साह में कोई कमी नहीं आने दी।

उत्तरायण के दूसरे दिन भी यह प्रथा जारी रही, और लोग कल के लिए उम्मीद लगाए हुए हैं कि हवा अनुकूल होगी और पतंग उड़ाने का असली मजा लिया जा सकेगा। इस पर्व ने साबित कर दिया कि शहरवासियों के उत्साह और परंपरा की मिठास कभी कम नहीं होती, चाहे मौसम कैसा भी हो। पूरे शहर में पटाखों की गूंज, रंग-बिरंगी आतिशबाजी और पतंगबाज़ी का आनंद इस पर्व को और भी जीवंत और यादगार बना गया।

इस साल का उत्तरायण अहमदाबाद के लिए केवल एक पारंपरिक त्योहार नहीं रहा, बल्कि यह शहरवासियों की ऊर्जा, उत्साह और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी बन गया। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी ने मिलकर इस पर्व को मनाया और शहर के आसमान में उड़ती पतंगों और चमकती आतिशबाजी के माध्यम से एक अद्भुत दृश्य रचा।

रायबरेली में ब्रेक फेल होने से दर्दनाक सड़क हादसा, चालक और खलासी की मौत

(जीएनएस)। रायबरेली। गुरुबख्शगंज थाना क्षेत्र के देदौर गांव के पास बुधवार को सड़क सुरक्षा के लिए एक चेतावनी बन गया, जब एक तेज रफ्तार लोडर अनियंत्रित होकर सड़क किनारे बने पक्के दीवार से जा टकराया। हादसे में लोडर चालक सौरभ (21) और कंडक्टर बृजेश (24) की मौके पर ही मौत हो गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, लोडर रायबरेली की ओर बढ़ रहा था। सामने से आ रहे एक बड़े ट्रक को बचाने के प्रयास में चालक ने ब्रेक लगाने की कोशिश की, लेकिन ब्रेक फेल हो गया। इस दौरान वाहन का एक टायर भी निकल गया, जिससे संतुलन पूरी तरह बिगड़ गया और लोडर सीधे सड़क किनारे बनी पक्की दीवार से जा टकराया। टक्कर इतनी भीषण थी कि वाहन के अगले हिस्से के परखच्चे उड़ गए और आसपास के लोगों में डर और सन्नाटा फैल गया।

हादसे की जानकारी मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। स्थानीय लोगों की मदद से गैस कटर की सहायता से वाहन को काटकर चालक और खलासी को बाहर निकाला गया। दोनों को तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

पुलिस ने मृतकों की पहचान सौरभ (21) और बृजेश (24) के रूप में की है। शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस ने घटनास्थल का मुआयना शुरू कर दिया है और हादसे के कारणों की जांच में जुट गई है। शुरुआती जांच में ब्रेक फेल होना और वाहन के टायर का निकलना मुख्य कारण बताए जा रहे हैं।

स्थानीय लोग बताते हैं कि यह मार्ग अक्सर भारी वाहनों और लोडरों से भरा रहता है, और तेज रफ्तार के कारण दुर्घटना की संभावना अधिक रहती है। उन्होंने प्रशासन से आग्रह किया है कि इस मार्ग पर सुरक्षा के लिए पर्याप्त चेतावनी संकेत, स्पीड ब्रेकर और नियमित सड़क निरीक्षण किया जाए, ताकि ऐसे हादसों को रोका जा सके।

यह हादसा एक बार फिर सड़क सुरक्षा के महत्व को रेखांकित करता है और यह चेतावनी देता है कि वाहन संचालन में लापरवाही और तकनीकी खामियां अक्सर जानलेवा साबित होती हैं। मृतकों के परिजन और गांव के लोग इस दुर्घटना से स्तब्ध हैं और प्रशासन से न्याय की उम्मीद कर रहे हैं।

भावनगर रेलवे मंडल की मीटर गेज (MG) ट्रेन सेवाओं के समय में संशोधन एवं कुछ ट्रेनों का निरस्तीकरण

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों को सूचित किया जाता है कि सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति से पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के मीटर गेज (MG) खंड की कुछ ट्रेन सेवाओं के समय में संशोधन किया गया है। यह संशोधन 19 जनवरी 2026 से प्रभावी होगा। उक्त संशोधन के तहत निम्नलिखित मीटर गेज ट्रेन सेवाओं को निरस्त किया गया है—

1.ट्रेन संख्या 52951/52952 जूनागढ़–देलवाड़ा–जूनागढ़

2.ट्रेन संख्या 52929/52930 जूनागढ़–वेरावल–जूनागढ़

यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, ट्रेन संख्या 52951/52952 (जूनागढ़–देलवाड़ा–जूनागढ़) के निरस्तीकरण के फलस्वरूप जेतलसर से देलवाड़ा की यात्रा करने वाले यात्रियों हेतु तलाला स्टेशन पर अधिकृत कनेक्शन की व्यवस्था की गई है। इसके अंतर्गत ट्रेन संख्या 52949/52950 (वेरावल–देलवाड़ा–वेरावल) के साथ ट्रेन संख्या 52946/52933 (जूनागढ़–वेरावल–जूनागढ़) का अधिकृत संयोजन प्रदान किया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार विस्तृत विवरण इस प्रकार है:-

1.ट्रेन संख्या 52949 वेरावल-देलवाडा मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से वेरावल स्टेशन से प्रस्थान समय 08.50 बजे तथा देलवाडा स्टेशन पर पहुंचने का समय 12.30 बजे होगा।

2.ट्रेन संख्या 52946 जूनागढ़-वेरावल मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से जूनागढ़ स्टेशन से प्रस्थान समय 06.15 बजे तथा वेरावल स्टेशन पर पहुंचने का समय 10.40 बजे होगा।

3.ट्रेन संख्या 52955 वेरावल-जूनागढ़ मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से वेरावल स्टेशन से प्रस्थान समय 06.15 बजे तथा जूनागढ़ स्टेशन पर पहुंचने का समय 10.20 बजे होगा।

4.ट्रेन संख्या 52933 वेरावल-जूनागढ़ मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से वेरावल स्टेशन से प्रस्थान समय 14.45 बजे तथा जूनागढ़ स्टेशन पर पहुंचने का समय 18.55 बजे होगा।

5.ट्रेन संख्या 52956 जूनागढ़-वेरावल मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 20.01.2026 से जूनागढ़ स्टेशन से प्रस्थान समय 08.00 बजे तथा वेरावल स्टेशन पर पहुंचने का समय 12.10 बजे होगा।

6.ट्रेन संख्या 52950 देलवाडा-वेरावल मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से देलवाडा स्टेशन से प्रस्थान समय 13.00 बजे तथा वेरावल स्टेशन पर पहुंचने का समय 16.35 बजे होगा।

भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि संशोधित समय-सारिणी का विस्तृत विवरण संबंधित स्टेशनों पर प्रदर्शित किया जा रहा है तथा रेलवे के अधिकृत माध्यमों के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

कांदिवली–बोरीवली सेक्शन पर छठी लाइन के कार्य के संबंध में पश्चिम रेलवे का मेजर ब्लॉक

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा कांदिवली और बोरीवली सेक्शन के बीच छठी लाइन के निर्माण कार्य को पूरा करने के लिए 20/21 दिसंबर, 2025 की रात से 30 दिनों का ब्लॉक लिया जा रहा है, जो 18 जनवरी, 2026 तक जारी रहेगा। इस ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेन सेवाएं प्रभावित होंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, उपर्युक्त कार्य के संबंध में 16/17 एवं 17/18 जनवरी, 2026 की रात्रि के दौरान बोरीवली और मालाड के बीच अप फास्ट लाइन पर रात 23:15 बजे से 03:15 बजे तक तथा डाउन फास्ट लाइन पर 01:00 बजे से 04:30 बजे तक मेजर ब्लॉक लिया जाएगा।

उपर्युक्त ब्लॉक तथा पाँचवीं लाइन के निलंबन तथा लगाए गए गति प्रतिबंध के कारण कुछ उपनगरीय सेवाएँ निरस्त रहेंगी।

ब्लॉक के कारण प्रभावित होने वाली उपनगरीय ट्रेनों की विस्तृत सूची अनुलग्नक–I एवं II में दी गई है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी संबंधित स्टेशन मास्टरों के पास उपलब्ध है। यात्रियों से अनुरोध है कि उपर्युक्त परिवर्तनों को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा की योजना बनाएं।

पिपली एवं लाखाबावल स्टेशनों पर कुछ ट्रेनों के ठहराव अस्थायी रूप से निलंबित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों को सूचित किया जाता है कि सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति से फुट ओवर ब्रिज (FOB) का कार्य पूर्ण न होने के कारण पिपली एवं लाखाबावल स्टेशनों पर कुछ ट्रेनों के ठहराव को अस्थायी रूप से निलंबित किया गया है। यह व्यवस्था 10 फरवरी 2026 तक प्रभावी रहेगी।

लाखाबावल स्टेशन पर जिन ट्रेनों का ठहराव अस्थायी रूप से निलंबित रहेगा:

1.ट्रेन संख्या 19209/19210 भावनगर–ओखा–भावनगर एक्सप्रेस

2.ट्रेन संख्या 59551/59552 राजकोट–ओखा-राजकोट पैसेंजर

पिपली स्टेशन पर जिन ट्रेनों का ठहराव अस्थायी रूप से निलंबित रहेगा:

1.ट्रेन संख्या 19210 ओखा–भावनगर एक्सप्रेस

हालांकि, ट्रेन संख्या 19209 भावनगर–ओखा एक्सप्रेस का पिपली स्टेशन पर ठहराव 16 जनवरी 2026 से पुनः बहाल कर दिया गया है, क्योंकि डाउन दिशा में नया प्लेटफॉर्म तैयार हो चुका है।

रेल प्रशासन द्वारा आरक्षित यात्रियों को एसएमएस अलर्ट के माध्यम से सूचित किया जाएगा। साथ ही, ट्रेनों में संभावित 15 मिनट या उससे अधिक की देरी की संभावना को देखते हुए यात्रियों से अनुरोध है कि वे NTES ऐप के माध्यम से अपनी ट्रेन की स्थिति की जानकारी लेते रहें।

यात्रियों से हुई असुविधा के लिए रेलवे प्रशासन खेद व्यक्त करता है और सहयोग की अपेक्षा करता है।

उत्तर पश्चिम रेलवे के रेन स्टेशन पर भावनगर-हरिद्वार द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस ट्रेन को मिला अतिरिक्त ठहराव

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार जोधपुर मंडल के रेन स्टेशन पर भावनगर-हरिद्वार द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस ट्रेन (19271/19272) को प्रायोगिक आधार पर अतिरिक्त ठहराव प्रदान किया गया है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इस ठहराव का विवरण निम्नानुसार है— ट्रेन संख्या 19272 हरिद्वार-भावनगर द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस, जो हरिद्वार से दिनांक 14 जनवरी, 2026 से प्रस्थान करेगी, उसका रेन (REN) स्टेशन पर आगमन समय 20:43 बजे तथा प्रस्थान समय 20:45 बजे रहेगा। इसी

प्रकार ट्रेन संख्या 19271 भावनगर-हरिद्वार द्वि-साप्ताहिक एक्सप्रेस, जो भावनगर से दिनांक 15 जनवरी, 2026 से प्रस्थान करेगी, उसका रेन (REN) स्टेशन पर आगमन समय 10:30 बजे तथा प्रस्थान समय 10:32 बजे निर्धारित किया गया है।

भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि यह ठहराव प्रायोगिक आधार पर प्रदान किया गया है, जो अगले आदेश तक प्रभावी रहेगा। इस अतिरिक्त ठहराव से रेन (REN) स्टेशन एवं आसपास के क्षेत्रों के यात्रियों को आवागमन में उल्लेखनीय सुविधा प्राप्त होगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 'गांधीनगर पतंग महोत्सव - 2026' का भव्य शुभारंभ कराया

▸▸ सेंट्रल विस्टा में आयोजित पतंग महोत्सव में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने पतंग उड़ाकर नगरवासियों को लड्डू और चिक्की का वितरण कर मकर संक्रांति के पावन पर्व की शुभकामनाएं दीं

▸▸ 'गांधीनगर पतंगोत्सव' के गुब्बारे को आकाश में उड़ाकर पतंग महोत्सव–2026 का शुभारंभ

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने उमंग एवं उल्लास के उत्तरायण पर्व के अवसर पर बुधवार को गांधीनगर में सेंट्रल विस्टा में सहाय फाउंडेशन द्वारा आयोजित पतंग महोत्सव–2026 का भव्य शुभारंभ कराया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल नगरवासियों के साथ पतंग उड़ाने के आनंद में सहभागी हुए और उत्तरायण पर्व की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने खुले आकाश में पतंग उड़ाकर नगरवासियों को मुरमुरे के लड्डू और चिक्की का वितरण किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य के सभी नागरिकों को उत्तरायण की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जिस प्रकार पतंग उड्डयन के पर्व में लोग अपनी पतंग को आकाश में उड़ाते हैं, उसी प्रकार यह पर्व सभी नागरिकों के जीवन में उन्नति

के साथ सुख, शांति और समृद्धि की भी नई ऊंचाइयां प्राप्त कराने वाला उमंग पर्व बने। मुख्यमंत्री ने 'गांधीनगर पतंगोत्सव' के गुब्बारे को आकाश में उड़ाकर पतंग महोत्सव–2026 का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, उप महापौर श्री नटूजी ठाकोर, स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री गौरांग व्यास, गांधीनगर शहर भाजपा अध्यक्ष श्री आशीष दवे, जिला कलेक्टर श्री मेहुल दवे, विदेशी पतंगबाजों सहित बड़ी संख्या में नगरवासी तथा बच्चे उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल अहमदाबाद में मकरसंक्रांति पर्व के उत्सव में सहभागी हुए

मुख्यमंत्री ने वाडीगाम के निवासियों के साथ पतंग उड़ाकर उत्तरायण पर्व का हर्षोल्लासपूर्वक उत्सव मनाया

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बुधवार को अहमदाबाद के ऐतिहासिक दरियापुर क्षेत्र के वाडीगाम में स्थानीय निवासियों के साथ मकरसंक्रांति पर्व का उत्सव मनाया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर राज्य के सभी नागरिकों को मकरसंक्रांति की शुभकामनाएं देते हुए सुख, शांति और समृद्धि की कामना की।

जिस प्रकार पतंग आकाश की ऊंचाइयों को छूती है, उसी प्रकार गुजरात विकास की नई ऊंचाइयों को प्राप्त करे; इस भावना के साथ मुख्यमंत्री ने वाडीगाम की मूळजी पारेख की पोल में पतंग उड़ाकर पर्व का आनंद लिया। मुख्यमंत्री को अपने बीच देखकर स्थानीय लोगों में विशेष उत्साह देखने को मिला।

मुख्यमंत्री का पोल के निवासियों ने अपने-अपने छतों से हर्षनाद और अभिवादन के साथ भावपूर्वक स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने अभिवादन स्वीकार कर सभी का उत्साह बढ़ाया।

इस उत्सव में मुख्यमंत्री के साथ अहमदाबाद के सांसद श्री दिनेशभाई मकवाणा, दरियापुर के विधायक श्री कौशिकभाई जैन, स्थानीय काउंसलर तथा राजनीतिक अग्रणी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री के साथ पतंगबाजी का आनंद लेने का अवसर मिलने से उपस्थित लोगों और पतंग प्रेमियों के लिए मकरसंक्रांति का यह उत्सव यादगार बन गया।

सोना वायदा 143500 रुपये और चांदी वायदा 287990 के ऑल टाइम हाई स्तर पर पहुँचा: क्रूड ऑयल वायदा में 63 रुपये की तेजी

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 258568.71 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 47902.09 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 210658.85 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 38797 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3030.61 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 40131.88 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 140501 रुपये के भाव पर खूलकर, 143500 रुपये के ऑल टाइम हाई और 140501 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 142241 रुपये के पिछले बंद के सामने 1113 रुपये या 0.78 फीसदी की मजबूती के साथ 143354 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा 912 रुपये या 0.79 फीसदी की तेजी के संग 116159 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा 126 रुपये या 0.87 फीसदी की तेजी के संग 14546 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 142600 रुपये के भाव पर खूलकर, 143195 रुपये के दिन के उच्च और 142228 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 1087 रुपये या 0.77 फीसदी की तेजी के संग 143034 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 142985 रुपये के भाव पर खूलकर, 143671 रुपये के दिन के उच्च और 142800 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 142531 रुपये के पिछले बंद के सामने 1069 रुपये या 0.75 फीसदी की तेजी के संग 143600 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 281698 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 287990 रुपये के ऑल टाइम हाई और नीचे में 280555 रुपये पर पहुंचकर, 275187 रुपये के पिछले बंद के सामने 11682 रुपये या 4.25 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 286869 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 11641 रुपये या 4.2 फीसदी की बढ़त के साथ 288522 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 11704 रुपये या

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 47902.09 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 210658.85 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 40131.88 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 38797 पॉइंट के स्तर पर

4.23 फीसदी की तेजी के संग 288571 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा।

मेटल वर्ग में 5131.18 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा 5.45 रुपये या 0.42 फीसदी की तेजी के संग 1315 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 2.6 रुपये या 0.83 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 315.05 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा 1.25 रुपये या 0.39 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 319.7 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा जनवरी वायदा 50 पैसे या 0.26 फीसदी चढ़कर 193 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 2660.42 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जनवरी वायदा 5501 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5580 रुपये और नीचे में 5448 रुपये पर पहुंचकर, 63 रुपये या 1.14 फीसदी बढ़कर 5578 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जनवरी वायदा 52 रुपये या 0.94 फीसदी की मजबूती के साथ 5574 रुपये प्रति बैरल बोला गया। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा 307 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 311.6 रुपये और नीचे में 302.8 रुपये पर पहुंचकर, 304.6 रुपये के पिछले बंद के सामने 6.7 रुपये या 2.2 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 311.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा 6.7 रुपये या 2.2 फीसदी की तेजी के संग 311.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा 982 रुपये पर खूलकर, 9.7 रुपये या 0.99 फीसदी औंधकर 971.6 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 15002.31 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 25129.57 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 4260.25 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 297.92 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 24.28 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 539.74 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 783.72 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1864.64 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 4.81 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 20307 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 76299 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 24814 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 376252 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 41914 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 14186 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 38755 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 97407 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 24937 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 47303 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स जनवरी वायदा 38497 पॉइंट पर खूलकर, 38797 के उच्च और 38326 के नीचले स्तर को छूकर, 661 पॉइंट बढ़कर 38797 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल जनवरी 5500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 23.3 रुपये की बढ़त के साथ 102 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस जनवरी 310 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 3.1 रुपये की बढ़त के साथ 16.75 रुपये हुआ।

सोना जनवरी 144000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 398.5 रुपये की बढ़त के साथ 2012.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी जनवरी 285000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 7785 रुपये की बढ़त के साथ 17300 रुपये हुआ। तांबा जनवरी 1375 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 81 पैसे के सुधार के साथ 15 रुपये हुआ। जस्ता जनवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 58 पैसे के सुधार के साथ 4.06 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल जनवरी 5500 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 23.2 रुपये की गिरावट के साथ 34 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस जनवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.4 रुपये की गिरावट के साथ 11.05 रुपये हुआ।

सोना जनवरी 130000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 3 रुपये की बढ़त के साथ 127.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी जनवरी 250000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1179.5 रुपये की गिरावट के साथ 3260 रुपये हुआ। जस्ता जनवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 33 पैसे की नरमी के साथ 1.22 रुपये हुआ।

पतंग की खुशियों पर मौत की डोर गुजरात में उत्तरायण के दो दिन बने खूनी

(जीएनएस)। गुजरात में उत्तरायण और मकर संक्रांति का पर्व जहां आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों और घर-घर उत्सव की रौनक लेकर आता है, वहीं इस बार यही उत्सव कई परिवारों के लिए जीवनभर का दर्द छोड़ गया। 14 और 15 जनवरी को सिर्फ दो दिनों के भीतर पतंग के मांझे ने छह लोगों की जान ले ली, जबकि आठ से ज्यादा लोग गंभीर रूप से घायल होकर अस्पतालों में जिंदगी और मौत के बीच जूझते रहे। राज्यभर से 805 इमरजेंसी कॉल दर्ज की गईं, जो यह बताने के लिए काफी हैं कि उत्सव के जोश में लापरवाही किस कदर जानलेवा साबित हो रही है।

हर साल की तरह इस बार भी प्रशासन और पुलिस ने सुरक्षा के दावे किए थे, लेकिन जमीन पर हालात कुछ और ही कहानी बयां कर रहे हैं। गुजरात के अलग-अलग जिलों से आई घटनाओं ने यह साफ कर दिया कि प्रतिबंध के बावजूद खतरनाक मांझे का इस्तेमाल थमा नहीं है। पतंग उड़ाने की मस्ती में इस्तेमाल की जा रही यह पतली लेकिन तेज धार वाली डोर राहगीरों, बाइक सवारों और बच्चों के लिए काल बन गई।

सूरत में तो उत्तरायण का त्योहार मातम में तब्दील हो गया। शहर में अलग-अलग हादसों में चार लोगों की मौत हो गई। सबसे दर्दनाक घटना वेड रोड और अडाजन को जोड़ने वाले पुल पर हुई, जहां एक पूरा परिवार खत्म हो गया। 35 वर्षीय रेहान अपनी पत्नी रेहाना और सात साल की बेटी आयशा के साथ बाइक से सुभाष गार्डन से लौट रहे थे। अचानक उड़ती पतंग की डोर बाइक में फंस गई। संतुलन बिगड़ा, बाइक डिवाइडर से टकराई और देखते ही देखते तीनों पुल से नीचे जा गिरे। रेहान और मासूम आयशा की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि रेहाना नीचे खड़े एक रिक्शे पर गिरने के बाद गंभीर रूप से घायल हो गईं। अस्पताल ले जाया गया, लेकिन इलाज के दौरान उन्होंने भी दम तोड़ दिया। एक पल में पूरा परिवार उजड़ गया और उत्तरायण की खुशियां उस घर से हमेशा के लिए चली गईं।

सूरत के ही वेसू इलाके में मांझे ने एक और युवक की जान ले ली। लाल घोड़ा क्षेत्र में 23 साल का युवक मोपेड से गुजर रहा था, तभी अचानक पतंग की डोर उसके गले में फंस गई। तेज धार वाली डोर ने गर्दन को बुरी तरह काट दिया। खून का फव्वारा फूट पड़ा और कुछ ही मिनटों में युवक की मौके पर ही मौत हो गई। आसपास मौजूद लोग कुछ समझ पाते, उससे पहले ही सब खत्म हो चुका था।

सूरत के अलावा भरूच जिले के जंबूसर तालुका के पिलुदरा गांव में भी पतंग का मांझा जानलेवा साबित हुआ। बाइक से जा रहे एक युवक की गर्दन अचानक उड़ती डोर से कट गई। गंभीर हालत में उसे अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन अत्यधिक खून बहने के कारण इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। परिवार के लिए यह हादसा किसी वज्रपात से कम नहीं था।

अरावली जिले के बयाड क्षेत्र में भी एक नाबालिग की जान मांझे ने ले ली। चोइला गांव में 17 वर्षीय तीर्थ मोपेड से जा रहा था, तभी पतंग की डोर उसके गले में उलझ गई। गर्दन गहराई तक कट गई। उसे तत्काल अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। जिस उम्र में सपने देखे जाते हैं, उसी उम्र में एक परिवार का चिराग बुझ गया।

पंचमहल जिले के दवाड़ा इलाके और नवसारी के गणदेवी रोड पर भी मांझे से जुड़े हादसे सामने आए। पंचमहल में एक युवक बाइक से हलोल जा रहा था, तभी चेहरे पर मांझा लग गया। गंभीर रूप से घायल युवक को पहले हलोल और फिर वडोदरा रेफर किया गया। नवसारी में पिता-पुत्र बाइक से गुजर रहे थे, तभी अचानक मांझे की चपेट में आ गए। पिता के नाक और कान पर गहरे कट लगे और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा।

इन घटनाओं के बीच इमरजेंसी सेवाएं भी लगातार अलर्ट मोड पर रहीं। दो दिनों में 805 से ज्यादा इमरजेंसी कॉल दर्ज की गईं। हालांकि प्रशासन का कहना है कि पिछले साल की तुलना में इस बार मामलों की संख्या कम है, लेकिन जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके लिए आंकड़ों का कोई महत्व नहीं रह जाता।

हर साल उत्तरायण के समय प्रशासन पतंग की डोर, खासकर चाइनीज और नायलॉन मांझे पर प्रतिबंध की बात करता है। जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं, पुलिस टीमें तैनात की जाती हैं, लेकिन इसके बावजूद बाजारों में खतरनाक मांझा चोरी-छिपे बिकता रहता है और लोग बेखौफ इसका इस्तेमाल करते हैं। नतीजा वही होता है—खुशियों के त्योहार पर मौत का साया।

उत्तरायण का पर्व गुजरात की सांस्कृतिक पहचान है, लेकिन जब यह उत्सव जान लेने लगे, तो समाज को भी आत्ममंथन करने की जरूरत है। पतंग उड़ाना आनंद का प्रतीक है, लेकिन वह आनंद तब तक ही सार्थक है, जब तक वह किसी की जिंदगी न छीन ले। मांझे से कटती गर्दनें, उजड़ते परिवार और अस्पतालों में तड़पते घायल यह सवाल छोड़ जाते हैं कि आखिर कब तक हर साल वही गलती दोहराई जाती रहेगी।

दो दिन में छह मौतें और सैकड़ों इमरजेंसी कॉल यह चेतावनी हैं कि अगर समय रहते सख्ती, जागरूकता और जिम्मेदारी नहीं आई, तो हर उत्तरायण किसी न किसी घर में मातम बनकर ही आएगी। पतंग की डोर अगर नियंत्रण में न आई, तो त्योहार की खुशियां यूं ही मौत की डोर में उलझती रहेंगी।

घृत की दिव्य शीतलता में एक माह का शिववास

(जीएनएस)। उत्तराखंड के देवभूमि कहे जाने वाले कुमाऊं अंचल में स्थित अल्मोड़ा का जागेश्वर धाम सदियों से आस्था, साधना और अनूठी परंपराओं का जीवंत केंद्र रहा है। मकर संक्रांति के पावन पर्व पर यहां एक बार फिर वह दुर्लभ धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हुआ, जिसकी प्रतीक्षा श्रद्धालु पूरे वर्ष करते हैं। भगवान महादेव को 251 किलो शुद्ध देशी गाय के घी से निर्मित विशेष गुफा में विराजमान किया गया, जहां वे आगामी एक माह(toggle? but keep) तक प्रतीकात्मक रूप से तपस्यारत रहेंगे। यह परंपरा न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि जागेश्वर धाम की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा भी है।

प्रातः काल से ही मंदिर परिसर में वैदिक मंत्रों की गूंज सुनाई देने लगी थी। मुख्य पुजारी महामंडलेश्वर पंडित हेमंत भट्ट के नेतृत्व में विद्वान ब्राह्मणों ने विधिवत पूजन संपन्न कराया। घी से गुफा निर्माण की प्रक्रिया अपने आप में अत्यंत श्रमसाध्य और श्रद्धा से परिपूर्ण होती है। गाय के शुद्ध घी को जल के साथ विशेष अनुपात में पिघलाया जाता है, फिर उसे ठंडा कर धीरे-धीरे परत दर परत गुफानुमा आकार दिया जाता है। इस संरचना से शिवलिंग को पूरी तरह आच्छादित किया जाता है, मानो महादेव हिमालय की किसी गुप्त कंदरा में ध्यानस्थ हो गए हों।

स्थानीय मान्यताओं के अनुसार मकर संक्रांति से सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं और यह काल देवताओं की साधना के लिए विशेष माना जाता है। इसी विश्वास के साथ भगवान शिव को घृत गुफा में विराजमान किया जाता है। कहा जाता है कि घी की शीतलता और पवित्रता शिव तत्व को जागृत करती है तथा वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। जागेश्वर के पुरोहित बताते हैं कि यह परंपरा सैकड़ों वर्ष पुरानी है और पीढ़ी दर पीढ़ी उसी विधि से निभाई जा रही है, जैसी पूर्वजों ने निर्धारित की थी।

घृत गुफा निर्माण के लिए प्रयुक्त 251 किलो घी आसपास के गांवों के गौपालकों से एकत्र किया जाता है। इसे केवल सामग्री नहीं, बल्कि भक्तों की सामूहिक श्रद्धा का प्रतीक माना जाता है। मंदिर प्रांगण में दूर-दूर से आए श्रद्धालु इस अनुष्ठान के साक्षी बनते हैं। कई लोग इसे देखने मात्र से ही जीवन में सुख-समृद्धि और आरोग्य की प्राप्ति का विश्वास रखते हैं। जागेश्वर धाम के शांत देवदार वन, प्राचीन पत्थर के मंदिर और बहती जटागंगा के बीच यह अनुष्ठान एक अलौकिक वातावरण रच देता है।

धार्मिक ग्रंथों में घी को सात्विकता और अमृत तुल्य बताया गया है। शिव पुराण तथा स्कंद पुराण में भी घृत से शिव पूजन का विशेष महत्व वर्णित है।

फियो को भारत के विदेश व्यापार में लगातार तेज़ी को लेकर उम्मीद; वैश्विक चुनौतियों के बावजूद अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान निर्यात में 4.33 प्रतिशत की वृद्धि

(जीएनएस)। नई दिल्ली। 15 जनवरी, 2025: फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशन (फियो) ने दिसंबर 2025 के व्यापार डेटा में दिखे भारत के विदेश व्यापार में लगातार और व्यापक वृद्धि पर मज़बूत उम्मीद जताई है। यह प्रदर्शन मौजूदा भू-राजनीतिक तनाव, सप्लाई-चेन में बदलाव, महंगाई के दबाव और प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में बढ़ते संरक्षणवाद के माहौल में और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

फियो के अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन ने डेटा पर टिप्पणी करते हुए कहा कि अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान भारत के निर्यात में लगातार विस्तार भारतीय निर्यातकों के लचीलेपन, फुर्ती और बढ़ती वैश्विक प्रतिस्पर्धा का स्पष्ट प्रमाण है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि निर्यातकों ने न केवल वैश्विक अनिश्चितताओं का सामना किया है, बल्कि एक सहायक नीतिगत माहौल की मदद से बाज़ार विविधीकरण, मूल्य संवर्धन और उत्पाद प्रतिस्पर्धा के माध्यम से उभरते अवसरों का भी लाभ उठाया है।

अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान भारत का कुल निर्यात 4.33 प्रतिशत बढ़कर 634.26 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि में यह 607.93 बिलियन डॉलर था। इस अवधि के दौरान वस्तु निर्यात 330.29 बिलियन डॉलर रहा, जो अप्रैल-दिसंबर 2024-25 में 322.41 बिलियन डॉलर की तुलना में 2.44 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। अकेले दिसंबर 2025 में निर्यात 1.87 प्रतिशत बढ़कर 38.51 बिलियन डॉलर हो गया, जो प्रमुख उत्पाद क्षेत्रों में लगातार मांग को दर्शाता है। श्री रल्हन ने कहा कि वैश्विक व्यापार प्रवाह में अस्थिरता को देखते हुए यह प्रदर्शन विशेष रूप से उत्साहजनक है, और यह निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सरकारी पहलों की प्रभावशीलता को दर्शाता है, जिसमें नीतिगत निरंतरता, निर्यात सुविधा उपाय, बेहतर लॉजिस्टिक्स, व्यापार प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण और एमएसएमई निर्यातकों को लक्षित समर्थन शामिल है।

आयात के मोर्चे पर, अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान भारत का कुल आयात 4.95 प्रतिशत बढ़कर 730.84 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह 696.37 बिलियन डॉलर था। वस्तु आयात 5.90 प्रतिशत बढ़कर 578.61 बिलियन डॉलर हो गया, जो अप्रैल-दिसंबर 2024-25 में 546.36 बिलियन डॉलर था। दिसंबर 2025 में आयात 63.55 बिलियन डॉलर रहा, जबकि एक साल पहले यह 58.43 बिलियन डॉलर था, जिसके कारण व्यापार घाटा 25 बिलियन डॉलर रहा।

श्री रल्हन ने बताया कि आयात में बढ़ोतरी एनर्जी प्रोडक्ट्स, इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और इंडस्ट्रियल इनपुट के ज़्यादा इनफ्लो मजबूत घरेलू मैन्युफैक्चरिंग एक्टिविटी, इंफ्रास्ट्रक्चर विस्तार और निवेश मांग का संकेत देते हैं, जो मध्यम अवधि की आर्थिक वृद्धि के लिए अच्छे संकेत हैं।

अप्रैल-दिसंबर 2025 के दौरान, इंजीनियरिंग गुड्स, पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स, इलेक्ट्रॉनिक गुड्स, ड्रग्स और फार्मास्यूटिकल्स, रत्न और आभूषण, रसायन, रेडीमेड गारमेंट्स, सूती वस्त्र, हथकरघा उत्पाद, चावल और समुद्री उत्पाद शीर्ष निर्यात वस्तु के रूप में उभरे। आयात के मामले में, प्रमुख वस्तुओं में पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स, इलेक्ट्रॉनिक गुड्स, सोना, मशीनरी, परिवहन उपकरण, अलौह धातु, रसायन, कोयला, प्लास्टिक और लोहा और इस्पात शामिल थे।

श्री रल्हन ने आगे बताया कि भारत के शीर्ष निर्यात गंतव्य—अमेरिका, यूएई, चीन, नीदरलैंड, ब्रिटेन, जर्मनी, बांग्लादेश, सिंगापुर, सऊदी अरब और हांगकांग—एक अच्छी तरह से विविध और लचीले निर्यात पदचिह्न को प्रदर्शित करते हैं। यह विविधीकरण ऐसे समय में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जब भू-राजनीतिक संघर्षों, प्रतिबंधों, शिपिंग व्यवधानों और रणनीतिक पुनर्गठन के कारण वैश्विक व्यापार मार्गों को नया आकार दिया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि अमेरिका और यूरोप जैसी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत की लगातार मजबूत भागीदारी, उभरते बाजारों और क्षेत्रीय भागीदारों के साथ गहरे व्यापार संबंधों के साथ, भारत को एक विश्वसनीय, भरोसेमंद और प्रतिस्पर्धी वैश्विक व्यापार भागीदार के रूप में मजबूत करता है। बांग्लादेश, सिंगापुर और सऊदी अरब को बढ़ते निर्यात भी क्षेत्रीय एकीकरण, विकासशील देशों के बीच सहयोग और हिंद-प्रशांत और मध्य पूर्व में रणनीतिक साझेदारी के महत्व को रेखांकित करते हैं।

श्री रल्हन ने दोहराया कि सराहनीय निर्यात प्रदर्शन भारत के निर्यातकों के सामूहिक प्रयासों और सरकार की सक्रिय और सुविधाजनक व्यापार नीतियों का परिणाम है। आगे बढ़ते हुए, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि निरंतर नीतिगत समर्थन, तेज लॉजिस्टिक्स, स्थिर व्यापार समझौते और बाजार विविधीकरण पर निरंतर ध्यान भारत की निर्यात वृद्धि की गति को और तेज करने के लिए महत्वपूर्ण होगा।

अहमदाबाद–मुंबई सेंट्रल शताब्दी एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त एसी चेयरकार कोच की बढ़ोतरी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए ट्रेन संख्या 12010/12009 अहमदाबाद-मुंबई सेंट्रल शताब्दी एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त एसी चेयरकार कोच अस्थायी रूप से जोड़ा जा रहा है। विवरण इस प्रकार है:

ट्रेन संख्या 12010/12009 अहमदाबाद–मुंबई सेंट्रल-अहमदाबाद शताब्दी एक्सप्रेस में एक अतिरिक्त एसी चेयरकार कोच दिनांक 01.02.2026 से 28.02.2026 तक अस्थायी रूप से लगाया जाएगा। ट्रेनों के ठहराव, संरचना तथा समय-सारिणी से संबंधित विस्तृत

जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

फ्लिपकार्ट में जेन ड्यूक की नियुक्ति से नैतिकता और अनुपालन के नए युग की शुरुआत

(जीएनएस)। भारतीय ई-कॉमर्स जगत में तेज़ी से बदलते कारोबारी परिदृश्य के बीच फ्लिपकार्ट ने एक ऐसा रणनीतिक कदम उठाया है, जिसे कंपनी के भविष्य की दिशा तय करने वाला माना जा रहा है। वॉलमार्ट समर्थित इस दिग्गज मंच ने जेन ड्यूक को मुख्य नैतिकता एवं अनुपालन अधिकारी के पद पर नियुक्त कर यह स्पष्ट संकेत दिया है कि आने वाले वर्षों में उसका पूरा जोर पारदर्शिता, जवाबदेही और अंतरराष्ट्रीय स्तर की कॉर्पोरेट गवर्नेंस व्यवस्था पर रहने वाला है। विशेष बात यह है कि यह नियुक्ति ऐसे समय में हुई है जब कंपनी अपने संभावित आरंभिक सार्वजनिक निर्गम यानी आईपीओ की तैयारियों को अंतिम रूप दे रही है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि इस कदम से निवेशकों के बीच भरोसा और मजबूत होगा तथा फ्लिपकार्ट की छवि एक परिपक्व और जिम्मेदार संगठन के रूप में उभरेगी।

फ्लिपकार्ट ने अपने आधिकारिक बयान में बताया कि जेन ड्यूक सीधे तौर पर वॉलमार्ट इंटरनेशनल के मुख्य नैतिकता एवं अनुपालन अधिकारी क्रिस साइरेन को रिपोर्ट करेंगी। इसके साथ ही वह फ्लिपकार्ट समूह के मुख्य कार्यपालक अधिकारी कल्याण कृष्णमूर्ति के साथ घनिष्ठ समन्वय बनाकर काम करेंगी। इस संरचना से यह साफ है कि कंपनी अपने भारतीय परिचालन और वैश्विक मानकों के बीच मजबूत तालमेल स्थापित करना चाहती है। वॉलमार्ट जैसी अंतरराष्ट्रीय खुदरा कंपनी के अनुभवों और प्रक्रियाओं को फ्लिपकार्ट के ढांचे में उतारने की यह कोशिश आने वाले समय में कई नीतिगत बदलावों का रास्ता खोल सकती है।

जेन ड्यूक का पेशेवर सफर बेहद प्रभावशाली रहा है। प्रवर्तन और कॉर्पोरेट अनुपालन के क्षेत्र में लगभग तीन दशकों का अनुभव रखने वाली ड्यूक ने अपने करियर में कई जटिल संगठनों में नेतृत्वकारी भूमिकाएं निभाई हैं। टायसन फूड्स जैसी वैश्विक कंपनी में मुख्य अनुपालन अधिकारी, उपाध्यक्ष और एसोसिएट जनरल काउंसल के तौर पर उन्होंने जो कार्य किया, उसे उद्योग जगत में उदाहरण के रूप में देखा जाता है। उससे पहले वह अमेरिका के अर्कांसस राज्य के पूर्वी जिले में अमेरिकी अटॉर्नी कार्यालय में एक दशक से अधिक समय तक सेवा दे चुकी हैं, जहां उन्हें कानून प्रवर्तन, जांच और नियामकीय प्रक्रियाओं की गहरी समझ हासिल हुई। यही अनुभव अब फ्लिपकार्ट के लिए सबसे बड़ी पूंजी साबित होने वाला है। फ्लिपकार्ट समूह के सीईओ कल्याण कृष्णमूर्ति ने इस नियुक्ति को कंपनी की दीर्घकालिक रणनीति का अहम हिस्सा बताया है। उनके अनुसार आज के डिजिटल युग में केवल व्यापार का विस्तार ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे सही मूल्यों और मजबूत नैतिक आधार पर खड़ा करना भी उतना ही जरूरी है। उन्होंने कहा कि जेन ड्यूक का अनुभव फ्लिपकार्ट को वैश्विक स्तर की सर्वोत्तम प्रथाओं के और करीब ले जाएगा। कंपनी जिस पैमाने पर भारत में काम कर रही है, वहां लाखों विक्रेताओं, करोड़ों ग्राहकों और हजारों कर्मचारियों के हित जुड़े हुए हैं। ऐसे में एक सशक्त अनुपालन तंत्र का होना केवल कानूनी जरूरत नहीं, बल्कि नैतिक जिम्मेदारी भी है। भारत में ई-कॉमर्स क्षेत्र बीते कुछ वर्षों में अभूतपूर्व गति से बढ़ा है। इस वृद्धि के साथ-साथ डेटा सुरक्षा, उपभोक्ता अधिकार, प्रतिस्पर्धा कानून, विक्रेता नीतियां और कराधान जैसे मुद्दे भी जटिल होते गए हैं। कई बार विदेशी निवेश, मूल्य निर्धारण की रणनीतियों और प्लेटफॉर्म पर तरजीही व्यवहार को लेकर सवाल उठते रहे हैं। ऐसे माहौल में फ्लिपकार्ट का यह कदम एक संदेश देता है कि कंपनी नियामकीय चुनौतियों से भागने के बजाय उनका व्यवस्थित समाधान चाहती है। जेन ड्यूक की भूमिका केवल नियमों का पालन करवाने तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि वह ऐसी संस्कृति विकसित करने का प्रयास करेंगी जहां हर निर्णय के केंद्र में नैतिकता हो।

आईपीओ की तैयारी कर रही किसी भी कंपनी के लिए गवर्नेंस ढांचा सबसे महत्वपूर्ण पहलू होता है।

एक नंबर अनेक मदद

मोबाइल पर इंटरनेट न होने पर भी आपकी सेवा में हाज़िर, भारतीय रेल की हेल्पलाइन संख्या 139

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा एवं त्वरित सहायता के उद्देश्य से भारतीय रेल द्वारा अखिल भारतीय हेल्पलाइन संख्या 139 संचालित की जा रही है। यह हेल्पलाइन 24 घंटे, सप्ताह के सभी दिनों यात्रियों के लिए उपलब्ध है। आपके मोबाइल पर इंटरनेट की सुविधा न हो या आपके मोबाइल में नेटवर्क न हो, आप 139 नंबर पर एसएमएस भेज कर भारतीय रेल की इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। श्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार एसएमएस माध्यम पर यह सेवा इस तरह काम करती है कि यदि आपको अपनी ट्रेन की वर्तमान स्थिति जाननी है तो SPOT के बाद स्पेस देते हुए ट्रेन का नंबर लिखकर 139 पर अपना एसएमएस भेजें और यदि किसी विशेष दिन की ट्रेन की वर्तमान स्थिति जाननी है तो SPOT के बाद स्पेस देते हुए ट्रेन का नंबर और फिर स्पेस देते हुए DDMMYY फॉर्मेट में दिनांक लिखकर 139 पर अपना एसएमएस भेजें। ठीक इसी तरह किसी विशेष दिन की विशेष स्टेशन पर ट्रेन की वर्तमान स्थिति जानने के लिए SPOT के बाद स्पेस देते हुए ट्रेन का नंबर फिर स्पेस देते हुए DDMMYY और उसके बाद स्पेस देते हुए स्टेशन का कोड लिखकर 139 पर अपना एसएमएस भेजें। किसी ट्रेन का अगर आपको रुट जानना है तो

ROUTE के बाद स्पेस देते हुए ट्रेन का नंबर लिखकर 139 पर अपना एसएमएस भेजें।

यदि किसी यात्री को ट्रेन का निर्धारित आगमन और प्रस्थान जानना है तो AD के बाद स्पेस देते हुए ट्रेन नंबर और उसके बाद स्पेस देते हुए स्टेशन कोड लिखकर इस फॉर्मेट में 139 पर अपना एसएमएस भेजें। रेल मदद में रेल सुविधा के परिप्रेक्ष्य में अपनी शिकायत MADAD के बाद स्पेस देते हुए अपने पीएनआर नंबर सहित शिकायत का विवरण 139 नंबर पर एसएमएस करें। इस सुविधा के माध्यम से आप अपना बुक किये हुए पार्सल का स्टेटस PRR के बाद स्पेस देते हुए अपना पार्सल रिफरेन्स लिखकर 139 नंबर पर एसएमएस कर भी जान सकते है।

हेल्पलाइन 139 के माध्यम से यात्री, ट्रेन से संबंधित पूछताछ एवं जानकारी, टिकट, आरक्षण एवं रद्दीकरण से जुड़ी जानकारी, ट्रेन की समय-सारिणी एवं लाइव रनिंग स्टेटस, शिकायत दर्ज करना एवं शिकायत की स्थिति जानना, आपात स्थिति में त्वरित सहायता, स्वच्छता, सुरक्षा, खानपान एवं अन्य यात्री सुविधाओं से संबंधित शिकायतें सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। यात्री कॉल, एसएमएस अथवा मोबाइल के माध्यम से हेल्पलाइन 139 पर संपर्क कर सकते हैं। यह सेवा बहुभाषी है, जिससे यात्रियों को अपनी भाषा में सहायता प्राप्त होती है। पश्चिम रेलवे का वडोदरा मंडल यात्रियों से अनुरोध करता है कि यात्रा के दौरान किसी भी समस्या, असुविधा या आपात स्थिति में हेल्पलाइन 139 का उपयोग करें और सुरक्षित एवं सुगम यात्रा सुनिश्चित करें।

20 जनवरी 2026 से 15 अप्रैल तक साबरमती रेलवे स्टेशन पर नए प्रवेश एवं निकास द्वार की व्यवस्था

(जीएनएस)। साबरमती रेलवे स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य तीव्र गति से प्रगति पर है। साबरमती (धरमनगर साइड) नई स्टेशन बिल्डिंग का निर्माण पूर्ण हो चुका है जबकि अन्य पुनर्विकास कार्य प्रगति पर है। यात्रियों की सुविधा एवं यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के उद्देश्य से 20 जनवरी 2026 से 15 अप्रैल 2026 तक आगमन एवं प्रस्थान हेतु नए प्रवेश एवं निकास द्वार तथा पिक-अप एवं ड्रॉप की व्यवस्था लागू की जा रही है। विवरण इस प्रकार है:

1. प्रस्थान करने वाले यात्रियों हेतु प्रवेश एवं निकास व्यवस्था

प्रवेश द्वार (Entry Gate): यात्रियों के वाहनों का प्रवेश MMTS बिल्डिंग (बुलेट ट्रेन स्टेशन) के पास (ग्रीन लाइन) से किया जाएगा।

यात्री नवनिर्मित स्टेशन बिल्डिंग में प्रवेश कर लिफ्ट, एस्कलेटर एवं सीढ़ियों के माध्यम से सेकंड फ्लोर से होते हुए सभी प्लेटफार्मों तक पहुंच सकेंगे।

यात्रियों को ड्रॉप करने वाले वाहन वर्तमान प्रवेश द्वार से बाहर निकल सकेंगे।

2. आगमन करने वाले यात्रियों हेतु निकास एवं पिक-अप व्यवस्था

निकास द्वार (Exit Gate): महेसाणा साइड फुट ओवर ब्रिज के पास (पर्पल लाइन) से निकास की व्यवस्था की गई है।

इसी स्थान पर यात्रियों के लिए पिक-अप जोन भी निर्धारित किया गया है।

3. पार्किंग सुविधा

यात्रियों की सुविधा के लिए निकास द्वार के निकट दो स्थानों पर पार्किंग की व्यवस्था की गई है।

4. प्लेटफार्म कनेक्टिविटी

सभी प्लेटफार्म (PF-1 से PF-7) दोनों फुट ओवर ब्रिज द्वारा आपस में जुड़े हुए हैं तथा कलोल साइड फुट ओवर ब्रिज के सभी प्लेटफॉर्म पर यात्रियों के लिए लिफ्ट की सुविधा उपलब्ध है।

5. नवनिर्मित स्टेशन बिल्डिंग में यात्री सुविधाएं

भूतल (Ground Floor): अनारक्षित टिकट बुकिंग (UTS)

प्रथम तल (First Floor): आरक्षित टिकट बुकिंग (PRS)

द्वितीय तल (Second Floor): प्रतीक्षालय

सभी यात्रियों से अनुरोध है कि वे नई यातायात व्यवस्था, संकेतकों तथा रेलवे एवं आरपीएफ एवं रेलकर्मियों के निर्देशों का पालन करें।

वैश्विक चुनौतियों के बीच भारतीय निर्यात की धीमी पर मजबूत वापसी

(जीएनएस)। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में जारी उतार-चढ़ाव, भू-राजनीतिक तनाव और मांग में अनिश्चितता के बावजूद भारतीय निर्यात ने दिसंबर महीने में सकारात्मक संकेत दिए हैं। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक देश का निर्यात 1.87 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 38.5 अरब डॉलर तक पहुंच गया, जो यह दर्शाता है कि वैश्विक विपरीत परिस्थितियों के बीच भी भारतीय उद्योग अपनी पकड़ बनाए रखने में सफल रहा है। यह बढ़त भले ही सीमित हो, लेकिन मौजूदा वैश्विक आर्थिक माहौल में इसे उत्साहजनक माना जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि प्रमुख बाजारों में मांग के स्थिर होने और कुछ क्षेत्रों के बेहतर प्रदर्शन ने निर्यात को सहारा दिया है। हालांकि इस सकारात्मक तस्वीर के साथ एक दूसरी हकीकत भी जुड़ी हुई है। दिसंबर में आयात में अपेक्षाकृत तेज वृद्धि दर्ज की गई, जिसके कारण व्यापार घाटा और चौड़ा हो गया। देश का कुल आयात 8.7 प्रतिशत बढ़कर 63.55 अरब डॉलर पर पहुंच गया। आयात और निर्यात के बीच बढ़ते अंतर के कारण व्यापार घाटा 25.04 अरब डॉलर के स्तर पर जा पहुंचा, जो पिछले महीनों की तुलना में अधिक है। नवंबर 2025 में यह घाटा 24.53 अरब डॉलर था, जबकि दिसंबर 2024 में यह 22 अरब डॉलर के आसपास रहा था। इससे साफ है कि कच्चे तेल, सोना, इलेक्ट्रॉनिक सामान और औद्योगिक कच्चे माल की बढ़ती मांग ने आयात बिल को ऊपर धकेला है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आंकड़े यह भी बताते हैं कि चालू वित्त वर्ष 2025-26 के पहले नौ महीनों यानी अप्रैल से दिसंबर के दौरान निर्यात और आयात दोनों में वृद्धि दर्ज की गई है। इस अवधि में वस्तु निर्यात 2.44 प्रतिशत बढ़कर 330.29 अरब डॉलर तक पहुंच गया, जबकि आयात 5.9 प्रतिशत की दर से बढ़ते हुए 578.61 अरब डॉलर रहा। इसके परिणामस्वरूप कुल व्यापार घाटा 248.32 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार यह स्थिति भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए मिश्रित संकेत देती है—एक ओर घरेलू मांग मजबूत है, लेकिन दूसरी ओर निर्यात की रफ्तार अपेक्षित गति नहीं पकड़ पा रही है। दिसंबर के आंकड़ों में सबसे उल्लेखनीय बात यह रही कि कुछ प्रमुख क्षेत्रों ने निर्यात को मजबूती प्रदान की। इंजीनियरिंग उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक्स, समुद्री उत्पाद और औषधि क्षेत्र ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए कुल निर्यात वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया। खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक्स और इंजीनियरिंग सेक्टर में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भारत की बढ़ती हिस्सेदारी का असर दिखाई देने लगा है। अमेरिका, चीन और संयुक्त अरब अमीरात जैसे प्रमुख व्यापारिक साझेदार देशों को निर्यात में स्थिर प्रगति दर्ज की गई, जो भारतीय उत्पादों की बढ़ती स्वीकार्यता को दर्शाता है। वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल के अनुसार वैश्विक स्तर पर चल रही चुनौतियों के बावजूद भारतीय निर्यातकों ने लचीलापन दिखाया है। उन्होंने कहा कि कई विकसित देशों में मांग सुस्त रहने, लाल सागर मार्ग में बाधाओं और कच्चे माल की कीमतों में उतार-चढ़ाव के बाद भी भारतीय उद्योग नए बाजारों में अवसर तलाश रहा है।